वर्त्तमान कविमंण्डल के भारत भानु कविराज,
पण्डित नाथूराम शंकर शर्म्मा (शंकर)
हरदुआगंज ज़ि० अलीगढ़ वासी
प्रणीत ।

शङ्कर सरोज
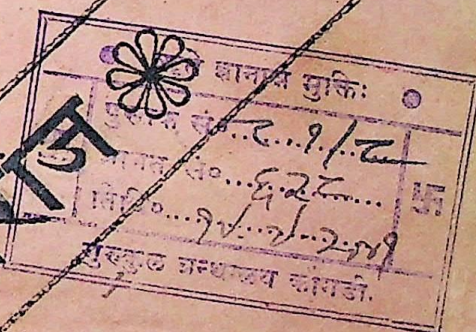
आर्य्य समाज बरौठा
पोस्ट आफिस—हर्दुआगंज
ज़िला अलीगढ़ द्वारा प्रकाशित ।
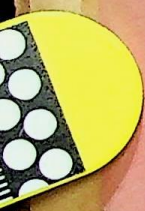
* ओ३म् *

॥ शंकर सरोज ॥

भारत प्रज्ञेन्दु, कविराज पं० नाथूराम शंकर शर्म्मा
हरदुआगंज ज़िला अलीगढ़ वासी
प्रणीत ।

और

आर्य्यसमाज बरौठा
पो० हरदुआगंज ज़िला अलीगढ़ द्वारा
प्रकाशित ।

मा० रघुनन्दनलाल के प्रबन्ध से
आर्य्यभास्कर प्रेस आगरा में मुद्रित।
(सन् १९०५ ई०)

प्रथमवार १०००] [मूल्य ।) मात्र
(डाकव्यय पृथक्)
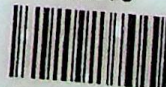
समर्पण ।

मेरे प्यारे !

श्रीमान् ठाकुर उमरावसिंह जी वर्म्मा प्रधान आर्य्यसमाज बरौठा !

जिसके "कहां गये वे दिन बुढ़िया बोल" इस भजन को मरण शय्या पर गाते गाते असार संसारसे न्यारे होगये वही "शंकर सरोज" आपके विमुक्त आत्मा को समर्पण किया जाता है !

पं० नाथूराम शंकर शर्म्मा (शंकर) कवि

षट्पदी छन्द।

शब्द अर्थ सम्बन्ध युक्त भाषा विशाल थल।
शक्ति सरोवर गद्य पद्य रचना विशुद्ध जल॥
आशय मूल प्रबन्ध नाल भूषण सुन्दर दल।
शंकर नवरस फूल ग्रन्थ मकरन्द मोद फल॥
परहित पराग छकि छकि मुदित रसिक भृङ्गगण गुञ्जरत।
नित या साहित्य सरोज की उन्नति कविकुल रवि करत॥

॥ भूमिका ॥

जिसकी कृपा कटाक्ष से भाषा साहित्य सरोवर में यह "शंकर सरोज" प्रफुल्लित हुआ है। उस सर्व शक्तिमान करुणामृत सागर महा प्रतापी ताप तमारि सच्चिदानन्द, शंकर, की सेवा में कविकुल किंकर "शंकर" का धन्यवाद पहुंचे ॥

जिसे परम हंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद् दयानन्द सरस्वतीजी महाराजके पुरुषार्थ प्रभंजन ने अविद्या बदली को उड़ाकर निरावर्ण कर दिया है। उसी वैदिकधर्म दिवाकर के प्रकाश में यह "शंकर सरोज" फूला रहैगा।

अर्वाचीन पद्यात्मिक पुस्तकों में से काव्य कहलाने योग्य तो विरले ही निकलेंगे परन्तु महाभ्रष्ट नीरस पद्यों के रचयिता जन अपनी २ गढ़ंत को कविता मान मान कर कविराज बन बैठे हैं। अब कहिये " कवि न होहुं नहिं चतुर कहाऊं " कहने वाले महाकवि गोस्वामि तुलसी दासजी एवं कविकुल कैरब कलाधर केशवदासजी आदि प्राचीन ग्रन्थकारों के लिये किन पदवियों का प्रयोग किया जाय, इसका उत्तर पढ़े और अनपढ़ दुराग्रही तुकिया लोग चाहे जैसा दें परन्तु मैं वर्त्तमान कवि समाजों से सोने चांदी के मेडल, (पदक) घड़ी, पगड़ी, दुशाले प्रशंसा पत्र आदि अनेक उपहार पाकर तथा कविमंडल में

भारत प्रज्ञेन्दु कविराज कहाकरभी उन भूत पूर्व पुण्यश्लोक प्रतिभा सम्पन्न महानुभावों की समता कदापि नहीं कर सकता।

छन्दप्रभाकर की समालोचना जो श्रीमती नागरी प्रचारिणी सभा के मन्त्री श्रीमान् बा० श्यामसुन्दर दास जी बी० ए० द्वारा मुद्रित हुई है उसका आरंभ यों है—

आज कल के उत्साही नव युवकों को (जो हिन्दी लिखने के प्रेमी होते हैं) प्रायःकविता करने का उमंग होताहै परन्तु कविता करनेके नियमोंको न जाननेसे प्रायःउसे नष्ट करके विज्ञ समाज में हास्यास्पद होते हैं (आर्यसमाज की कविता इसके उदाहरण में है) इस यथार्थ आक्षेप की पौछाड़ हिन्दुओं के, विद्या वारिधि, साहित्याचार्य्य, महामहोपाध्याय, महापुरुषों एवं नई रोशनीके बी.ए. एल. एल.बी. आदि उन नेटिव जेंटिल मैनों पर भी पड़ सकती है जिनको साहित्य हत्याकार कहना भी अनुचित न होगा। तौ भी समालोचक जी ने वे सब निष्कलंक समझ कर छोड़ दिये। ऐसा अधूड़ा न्याय मेरे मनको सन्तापित क्यों न करता परन्तु किया क्या जाय क्यों कि अन्धों के थोक में से थोड़ों को अंधे कहने वाला भी अपराधी नहीं होसकता।

सुधार का संकल्प उठतेही—"सिकन्दराबाद के अधिवेशन" में प्रार्थनापत्र देकर श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा आगरा व अवध से सामाजिक पद्य पुस्तकोंके परिशोधन का अधिकार प्राप्त करना पड़ा, जिसकी सूचना 'आर्य्यमित्र'

द्वारा सारे समाजों को देदीगई तौ भी कवि नाम धारी आर्य्य महाशयों की कटीली कविता का कलेवर जैसा था वैसाही बना रहा, इसका कारण कोरा अभिमान अथवा और कुछ होगा, सो परमात्मा जाने !

अन्त को आर्य्यसमाज बरौठा के प्रधान श्रीमान् ठाकुर उमरावसिंह जी * वर्म्मा व मन्त्री ठाकुर खमानसिंह जी वर्म्मा को इस बात पर उत्तेजित किया कि यदि आप छपाने का भार उठा सकें तौ मैं एक ऐसी भजनमाला बना दूं कि जिसकी बड़ाई सर्व साधारण तौ क्या वरन मुख्य २ महाशय भी करेंगे, उक्त गुण ग्राहक महाशयों ने मेरे प्रस्ताव को सानन्द स्वीकार कर लिया, काम पूरा होतेही पद्यों की रचना पर प्रसन्न होकर उपरोक्त समाज के समस्त सभासदों ने मुझ ऐसे अल्पज्ञ को १००) रुपये का पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया, और इस "शंकर सरोज" को अपना लिया, अब "शंकरसरोज" के छपाने बेचने आदि का अधिकार केवल आर्य्य समाज बरौठा को ही रहैगा ॥

यदि "शंकरसरोज" रसिक मलिंदों को मनमाने माधुर्य्य मकरन्द से मुग्ध करने लगा तौ मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा ॥

कविकुल किंकर—
पं० नाथूराम शंकर शर्म्मा (शंकर) कवि
हरदुआगंज ज़ि० अलीगढ़ ।

---

* शोक ! पुस्तक के अपूर्ण कालही में आपका जीवन काल पूर्ण होगया ॥

(कर्णसिंह उपमन्त्री)

* ओ३म् *

—* सच्चिदानन्देश्वरायनमः *—

॥❀॥ शंकर सरोज ॥❀॥

षट् पदी छन्द ॥१॥

शुद्ध सच्चिदानन्द स्वयंभू शिव सविता तू ।
पूरण पुरुष प्रमाण प्राण प्रिय परम पिता तू ॥
इन्द्र भूमि जलअग्नि वायु आकाश कालतू ।
विश्व विधायक विश्व विश्वपति विश्वपालतू ॥
रमि रह्यौ सर्व संघात में निर्गुण गुण गण धारतू ।
सब जीवन कौ जीवन बनौ रे "शंकर" करतार तू ॥

दोहा ॥२॥

भयौ न है नन होयगौ, शंकर कोई और ।
सर्व शक्ति सम्पन्न है, एक तुही सबठौर॥

भजन ॥३॥

अक्षर एक सच्चिदानन्द । टेक—
व्यापक ब्रह्म विशुद्ध विधाता—अखिललोक त्राता पितुमाता—
त्रिविधि तापहारी सुखदाता—
पूरण करुणाकन्द (१) अक्षर एक सच्चिदानन्द ॥

अजअनादि अविचलअविकारी-विश्व विश्वपति विश्वविहारी-
नारायण निर्गुण गुणधारी-
स्वाभाविक स्वच्छन्द (२) अक्षर एक सच्चिदानन्द ॥
सङ्ग सर्व संघात असङ्गी–अङ्ग बिहीन अङ्ग सब अङ्गी–
रङ्ग न रूप बनौ बहुरङ्गी–
प्रकृति चकोरी चन्द (३) अक्षर एक सच्चिदानन्द ॥
सर्व शक्ति सम्पन्न प्रतापी–मुनि योगिन कौ मित्र मिलापी–
ताहि न पावत तोसे पापी–
रे "शंकर" मतिमन्द (४) अक्षर एक सच्चिदानन्द ॥

भजन ॥४॥

पूरण पुरुष परम सुखदाता–
हम सबकौ करतार है (टेक)
मङ्गलमूल अमङ्गल हारी–अगम अगोचर अज अविकारी–
शिव सच्चिदानन्द अविनाशी–
एक अखण्ड अपार है (१) पूरण पुरुष परम सु० ॥
बिन कर करै चरणबिन डोलै–बिन दृग देखै मुखबिन बोलै–
बिन श्रुत सुनै नाक बिन सूँघै–
मन बिन करत बिचार है (२) पूरण पुरुष परम सु० ॥
उपजावै धारै संहारै–रच रच बारम्बार बिगारै–
दिव्य दृश्य जाकी रचनाकौ–
यह सारौ संसार है (३) पूरण पुरुष परम सु० ॥
प्राणप्राण कौ जीवन जीकौ–स्वाभाविक स्वामी सबहीकौ–
इष्ट देव सांचे सन्तन कौ-
"शंकर" कौ भरतार है (४) पूरण पुरुष परम सु० ॥

भजन ॥ ५ ॥

जय जगदाधार–
जीवन प्राण हमारे (टेक)

अज्ञान महातम टारौ–विज्ञान प्रकाश पसारौ—
करौ ध्रुव धर्म्म प्रचार ।
जीवन प्राण हमारे ॥ १ ॥

आलस्य असुर को मारौ–पुनि पातक पुंज पजारौ—
हरौ भ्रम जनित विकार ।
जीवन प्राण हमारे ॥ २ ॥

भवसागर पार उतारौ–सुधि लेहु देहु फल चारौ—
दयानिधि परम उदार ।
जीवन प्राण हमारे ॥ ३ ॥

शिव "शंकर" नाम तिहारौ—सब संकट काटन हारौ–
जपैं जन वारम्बार ।
जीवन प्राण हमारे ॥ ४ ॥

भजन ॥ ६ ॥

जादिन अपनावैंगे आप । टेक—
वेद पढ़ावैंगे हम सबको" ज्ञानी गुरु मा बाप ।
स्वामी छूट जायँगे छिन में" घोर कुकर्म कलाप ॥
जादिन अपनावैंगे आप ॥ १ ॥
पौरुष पावक में पजरेंगे" आलस के अभिशाप ।
बैर बिसार सुपंथ गहैंगे" करके मेल मिलाप ॥
जादिन अपनावैंगे आप ॥ २ ॥

व्रत बारिधि में बूड़ मरेंगे "जन्म जन्म के पाप।
फिर व्याकुल कबहू न करेंगे" मोह शोक संताप॥
जादिन अपनावेंगे आप॥ ३॥
भूखे भारत में न बसेंगे "दंभ अविद्यादाप।
परम शुद्ध वे पद गावेंगे" जिनमें "शंकर" छाप॥
जादिन अपनावेंगे आप॥ ४॥

भजन॥ ७॥

उस अविनाशी करतार को—
जो जीव जान लेता है (टेक)

सो सब दोषों से डरता है—भक्ति भाव मनमें भरता है—
नित निष्काम कर्म्म करता है—केवल ब्रह्म विचार को—
सुख मूल मान लेता है।
जो जीव जान लेता है॥ १॥

मायिक मोह जाल जलता है—जीवन कल्प वृक्ष फलता है-
सीधे मारगमें चलता है,—प्यारे पर उपकारको—
प्रण ठीक ठान लेता है।
जो जीव जान लेता है॥ २॥

जिस ध्वनिमें निमग्न रहता है,—तन्मय कूट कथाकहता है-
तब सो प्रेमामृत बहता है,—जो भरज्ञानागारको—
उरमें उफान लेता है।
जो जीव जान लेता है॥ ३॥

बन विशुद्ध भीतर बाहरसे—तर असार संसृतसागरसे—
प्रभु सच्चिदानन्द "शंकर" से—अपने सर्वसुधार को—
आनन्द दान लेता है ।
जो जीव जान लेता है ॥४॥

घनाक्षरी—कवित्त ॥८॥

जाके आदि अंत को न जोगी जन जानत हैं—
नेति नेति वेद ने अनेक बार गाई है।
भूमि जल पावक समीर नभ काल दिशा—
आदि में अमाई परसारी न समाई है ॥
लोकन को रचि रचि धारति बिगारति है—
पाई सब ठौर पूरी किनहूं न पाई है ।
ऐसी बड़ी ब्रह्म की बड़ाई गुरु देव जूने—
ज्ञान द्वारा "शंकर" के ध्यान में धसाई है ॥

भजन ॥९॥

कौन उपाय करूं पिय प्यारौ—
साथ रहै पर हाथ न आवे (टेक)
चहुंदिस दौरी द्वन्द मचायौ—अचल अचंचल पकड़ न पायौ·
खुलत न खेलत खेल खिलाड़ी—मोहि खिलौना मान खिलावै ॥
कौन उपाय करूं पिय प्यारौ ।
साथ रहै पर हाथ न आवै ॥ टेक ॥
पल भर को कबहू न विसारै—हिल मिल मेरौ रूप निहारै—
रसिक शिरोमणि मो बिरहिनको—हा अपनौ मुखड़ा न दिखावै ॥

कौन उपाय करूं पिय प्यारौ ।
साथ रहै पर हाथ न आवै ॥
माया मय मनमोहन हारे—अद्भुत योग वियोग पसारे—
या विहार थल के भोगन को—आपन भोगै मोहि भुगावै ॥
कौन उपाय करूं पिय प्यारौ ।
साथ रहै पर हाथ न आवै ॥
करि हारी साधन वहुतेरे—होत न सिद्ध मनोरथ मेरे—
दोष कहा "शंकर" स्वामीकौ—कुटिल कर्म गतिनाच नचावै ॥
कौन उपाय करूं पिय प्यारौ ।
साथ रहै पर हाथन आवै ॥

भजन ॥ १० ॥

आज अली विछुरौ पिय पायौ--
मिट गये सकल कलेशरी (टेक)
सागर ताल नदी नद नारे—ग्राम नगर गिरि कानन सारे—
एक न छोड़ौ ढूंड़ फिरी मैं--
भटकी देश विदेशरी (१) आ०अ० वि०पि०पा०मि०स०क०
मैं बिरहिन ऐसी बौरानी—सीखत डोली कपट कहानी—
घेर घेर लोगन बहकाई--
कर कोरे उपदेशरी (२)आ ०अ०वि०पि०पा ०मि०स ०क०
वीत गई सारी तरुणाई—पर प्यारे की थांग न पाई—
खोजत खोजत मो दुखियाके--
धौरे हैगये केशरी (३)आ०अ ०वि०पि०पा०मि०स०क०-
योगी एक अचानक आयौ—जिन मेरौ भरतार बतायौ-

सो "शंकर" सांचौ हितकारी,
भ्रमतम पटल दिनेशारी (४) आ०अ०वि०पि०पा०मि०स०क०

(गुरु गौरवादर्श)

भजन (११)

श्रीगुरु देव दयालु हमारे,
बड़भागी हम सेवक सारे । टेक—

बाल ब्रह्मचारी बुध नीके, जीवन मुक्त सुधाम सुधीके,
सांचे शुभचिन्तक सबही के, विरति वाटिकाके रखवारे ।
श्रीगुरु देव दयालु हमारे ।
बड़भागी हम सेवक सारे ॥

धर्मवीर सागर साहसके; रसिया सामाजिक सुखरसके,
दिन नायक उपदेश दिवसके, मोह महातम टारनहारे ।
श्रीगुरु देव दयालु हमारे ।
बड़भागी हम सेवक सारे ॥

दीपक पर उपकार सदनके, दावानल अवगुण गणवनके,
पंचाननअघओघ मृगनके, कीरति कामिनिके चखतारे ।
श्रीगुरु देव दयालु हमारे ।
बड़भागी हम सेवकसारे ॥

ध्रुव सम्राट समाधि धराके, रक्षक रानी ऋतम्भराके,
प्रेमी अपरा और पराके, परमसिद्ध "शंकर" के प्यारे ।
श्रीगुरु देव दयालु हमारे ।
बड़भागी हम सेवक सारे ॥

भजन ॥१२॥

अबको करै आपकी जाँच । टेक,

देव दया कर मैं अपनायौ, आनन्दामृत पान करायौ,
बुझगई प्रबल मोहमायाकी, आज अचानक आँच ।
अबको करै आप की जाँच ॥

शंका समाधान के मारे, हार हार भागे भ्रम सारे,
हठबादी जड़ता न तजैंगे, केवल सौ में पाँच ॥
अबको करै आप की जाँच

मायिक मतबारे जड़जीते, दाहकदिवस दम्भके बीते,
कर कुसंग ढीलौ करडारौ, गूढ़ढोंग कौ ढाँच ॥
अबको करै आप की जाँच ॥

सब ग्रंथन में भूल भरी है, एक रावरी खोज खरी है,
"शंकर" को उपदेश देत हौ, श्रीमुख द्वारा साँच ॥
अबको करै आप की जाँच ॥

भजन ॥१३॥

उस योगीने संसार का—
कैसा उपकार किया है ॥ टेक ॥

गेह बिसार गही गुरु शिक्षा, धार महाव्रत माँगी भिक्षा,
जीवन भर त्यागी न तितिक्षा, दुर्लभ ब्रह्मविचार का,
पीयूष पवित्र पिया है ।
कैसा उपकार कियाहै ॥

कभी किसी को नहीं सताया, सब को सीधा पंथ बताया,

धर्म कर्म का मर्म जताया, विद्या के परिवार का,
दरबार दिखाय दिया है ॥
कैसा उपकार किया है ॥
वैदिक मत का मान बढ़ाया, मिटगई महामोहकी माया,
पलट दई भारत की काया, ऐसे परम उदार का,
बल पाय सुधार जिया है ॥
कैसा उपकार किया है ॥
अब हम लोग न पाप करेंगे, प्रभुशंकर का ध्यान धरेंगे,
भवसागर से क्यों न तरेंगे, संकट के संहार का,
शुभ साधन जान लिया है ॥
कैसा उपकार किया है ॥४॥

राजगीत ॥ १४ ॥

आनन्द सुधासार दयाकर पिलागया ॥
भारत को "दयानन्द" दुबारा जिलागया ॥
डाला सुधार वारिबढ़ी बेल मेलकी ॥
देखो समाज फूल फबीले खिलागया ॥
काटे कराल जाल अविद्या अधर्मके ॥
विद्याबधू को धर्म्मधनी से मिलागया ॥
ऊंचे चढ़े न कूर कुचाली गिरादिये ॥
यज्ञाधिकार वेद पढ़ों को दिलागया ॥
खोली कहां न पोल ढके ढोंग ढोलकी ॥
संसारके कुपंथ मतों को हिलागया ॥
"शंकर" दिया बुझाय दिवालीको देहका ॥
कैवल्य के विशाल वदनमें बिलागया ॥ १ ॥

भुजङ्ग प्रयातीय-राज गीत ॥१५॥

दया और आनन्द के प्राण प्यारे। प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे॥
महा साहसी धीर, धर्म्मज्ञ पूरे। सखा शील के शारदा के दुलारे॥
जड़ी भूत भूतेश की भक्ति भूले। कहा जीवसे ब्रह्म की ओर आरे॥
रहे आदि से अन्त लों ब्रह्मचारी। पढ़े वेद चारौ विचारे प्रचारे॥
बचे राग से दुष्ट संकल्प त्यागे। रँगे योग में भोग सारे बिसारे॥
सुनासच्चिदानन्द की शुद्ध वाणी। सुधी साधु साधे असाधू सुधारे॥
महामोह वारीश में बूड़ने से। बचाये घने भेड़-चाली बिचारे॥
दिखादोष पाखण्ड की पोल खोली। विवादी विरोधीन के मान मारे॥
लगा जांचकी आंच ओछे मतोंमें। पुराने नये पन्थ पूरे पजारे॥
जली जाल माया वलीजैनियों की। पड़े बुद्ध के बोध पै भी अँगारे॥
न चें चें चली चाल चालाक चूके। मियां मौळवी पादरी पोप हारे॥
लुके लालची लंठ पाधा पुजारी। डरे ज्योतिषी नाम धारी भरारे॥
कुचाळी कुढ़ें पातकी पेट पीटें। भिखारी महाराज हाहा पुकारे॥
दई देवता भूतनी भूत भागे। न पाते पुजापे न खाते उतारे॥
मरों को दिळा पिण्ड पानी परोसे। पड़े माल मारें न माठू मुछारे॥
उतारे दुराचारियों के शिरों से। दुराशा छुआ छूत के भार भारे॥
महा मंगला जीतकी ज्योति जागी। मुँदे आसुरी हारके तर्क तारे॥
अविद्या उलूकी उड़ादी दया ने। किये दूर आनन्द ने शोक सारे॥
सुनी सैकड़ों गालियां पापियों की। भगोड़े भिड़े ईंट पाषाण मारे॥
अकेले फिरे कष्ट पै कष्ट झेले। मिले सत्य से धर्म्म पै प्राणवारे॥
चमी अन्तको हाय होली दिवाली। महानन्द की ओर सीधे सिधारे॥
निजानन्द में 'शंकरानन्द' दाता। रहेंगे सुखारे रहेंगे सुखारे॥

(गजेन्द्र मोक्ष)

भजन (१६)

वाह सतगुरु वाह सतगुरु वाह सतगुरु वाह ।
वा०स०वा०स०वा०स० वाह ॥ टेक ॥

मोह मारग में डरौ सौ, फिरत व्याकुल बावरौ सौ,
काल केहरि कौ सतायौ, जीव कुञ्जर नाह,
भूळौ बोध बन की राह ।
वा० स० वा० स० वा० स० वाह ॥

आधि आतप ने तपायौ, योनि सरिता तीर आयौ,
जन्म जीवन मरण जामें, अमित आप अथाह,
आवागमन प्रबळ प्रवाह ।
वा० स० वा० स० वा० स० वाह ॥

आस प्यास न रोक पाई, धस परौ धारा मझाई,
द्वन्द दल दल माहिं जूझौ, कर्म्म बन्धन ग्राह,
उर आखेट कौ उतसाह ।
वा० स० वा० स० वा० स० वाह ॥

करि कियौ बळहीन अरिने, आप के उपदेश हरिने,
धाय धरि छिन में छुड़ायौ, मेंट दारुण दाह,
"शंकर" कछुन राखी चाह ।
वा० स० वा स० वा० स० वाह ॥

(आर्य्यसमाज का अभ्युदय)

लावनी (१७)

इसके बलका किस ने कैसा फल पाया ॥
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥ टेक ॥
सबसाधुबने परमेश्वर के अनुरागी ॥
जड़ता तमकी जननी जड़पूजा त्यागी ॥
बढ़गई मेल की बेल एकताजागी ॥
फटगया फूटका पेट अविद्या भागी ॥
उपजा विवेक मिटगई मोहकी माया ॥
समझौ समाजने क्याक्या कर दिखलाया ॥१॥
कटगये कटीले कपट जालके फंदे ॥
खुलगये लोभलीला के गौरख धंदे ॥
भ्रमसागर में गिर गये गपोड़े गंदे ॥
परमारथको समझे स्वारथके बंदे ॥
विपरीत मतों का घोर घमंड घटाया ॥
समझौ समाज ने क्याक्या कर दिखलाया ॥२॥
सब देशों में वैदिक उपदेश प्रचारे ॥
पूजे सतगुरु पितुमात मूढ़फटकारे ॥
कर दिये दूर मतिमन्द प्रमादीसारे ॥
होगये जीविकाहीन हठीले हारे ॥
भारतभर में सुखमूल सुधार समाया ॥
समझौ समाज ने क्याक्या कर दिखलाया ॥३॥

निर्दोष अर्थ वेदों के ज्ञान जनाये ॥
मंतव्य महापुरुषों के मानमनाये ॥
खोले गुरुकुल कालेज अनेक बनाये ॥
कुलहीन दीन अगणित अनाथ अपनाये ॥
प्रतिनिधि मंडलका मान भलों को भाया ॥
समझौ समाज ने क्याक्या करदिखलाया॥४॥
शिशु ब्रह्मचर्य व्रत धार वेद पढ़ते हैं ॥
ज्ञानी बनबन गौरव गिरिपर चढ़ते हैं ॥
बल दैहिकात्मिक सामाजिक बढ़ते हैं ॥
शिक्षा सागर से देव रत्न कढ़ते हैं ॥
लोपलट गई प्रतिकूल कालकी काया ॥
समझौ समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥५॥
बचगये न मायाबाद भीलने लूटे ॥
पड़ गोतम की गड़ वड़ में मूड़ न फूटे ॥
खलदल द्वारा शुभ साधन दुर्ग न टूटे ॥
दुर दुर छी छी की छुआ छूत से छूटे ॥
ठगियों की ठगई से निज धर्म्म बचाया ॥
समझौ समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥६॥
गुणकर्म स्वभावों से परखे जाते हैं ॥
नरनारि यथाविधि वर्ण वरण पाते हैं ॥
वेदों की शरण विधर्म्मी जब आते हैं ॥
वेभी अवगुण तज आरज कहलाते हैं ॥
वैदिक मत ने कब किसे न कंठ लगाया ॥

समझौ समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥७॥
विधवा दल के दुख रिपु नियोग ने मारे ॥
अब नहीं गिराते गर्भ जार हत्यारे ॥
भट बाल विवाह बिघाती के हियहारे ॥
गोवध केहरि के फूटगये चखतारे ॥
अन्याय असुर के घरका दिया बुझाया ॥
समझौ समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥ ७ ॥
फलखाते हैं लाखों पल खाने वाले।
पयपीते हैं वारुणी उड़ाने वाले ॥
बनगये जती चकलों में जाने वाले ॥
छूटे छलबल से पाप कमाने वाले ॥
शुभ सदाचार का शंख निशंक बजाया ॥
समझौ समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥ ८॥
सब नियमों का जो एक नित्यनेता है ॥
वह निराकार अब तार कहां लेता है ॥
मुरदा खाने पीने को कबचेता है ॥
कल्पित भूतों का दल क्या फल देता है ॥
यों पोल खोल पौराणिक दंभदबाया ॥
समझौ समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥ ९ ॥
चढ़ वेदों ने सब ग्रंथ जगत के जीते ॥
यज्ञों की अबनति के निशि बासरबीते ॥
देखे नर नारि सुकर्म सुधारस पीते ॥
होगये सुकवि "शंकर" के मन के चीते ॥
सुख देती है मुनि "दयानन्द" की दाया ॥
समझौ समाज ने क्या क्या कर दिखलाया॥१०

आर्य्यसमाजके दश नियमोंका पद्यात्मक भावार्थ ।

भजन (१८)

(१) सकल सत्य विद्या, विद्या से जो कुछ जाना जाता है,
आदिमूल सबहीका "शंकर" एक समझमेंआताहै (टेक)

(२) सर्व शक्ति सम्पन्न विधाता ब्रह्म विश्वका करता है ।
शुद्ध सच्चिदानन्द निरामय नित्य निशंक न मरता है ॥
अकल अनन्त अनादि अजन्मा भौतिक देह न धरता है ।
न्यायशील सर्वज्ञ दयानिधि जड़ जीवों का भरता है ॥
धरौ उसीका ध्यान दूसरा कौन मुक्तिका दाता है ।
आदिमूल सबही का "शंकर" एक समझ में आताहै (१)

(३) जो विद्या वारिधि वेदों को प्यारे पढ़ौ पढ़ाओगे ।
सुनौ सुनाओगे तो अपने तीनौ ताप नसाओगे ॥
(४) धारौ सत्य असत्य बिसारौ तब चारौं फल पाओगे ।
(५) झूंठ सांच कोजांच धर्म्म केधाम कामकर जाओगे ॥
तौ न रहौगे उनमें जिनका पंच भूतसे नाता है ।
आदि मूल सबहीका "शङ्कर" एक समझ मेंआताहै (२)

(६) तुमसामाजिक दैहिकात्मिक उन्नति अनुदिन कियाकरौ ।
मान मुख्य उद्देश षड़ङ्गी का सब को सुखदियाकरौ ॥
(७) यथायोग्य बर्त्तौ सब से प्रतिवार प्रेम यशलियाकरौ ।
(८) आठौयाम अविद्याको तज विद्याका रस पियाकरौ ॥

(९) सबकी उन्नतिमें निज उन्नतिकी नवनिधि नरपाताहै।
आदि मूल सबहीका "शंकर" एकसमझमें आताहै (३)
(१०) सबके हितकारी नियमोंके पालनमें परतन्त्र रहौ।
नीति रीति सीखौ समाज की गुरु लोगों की गैल गहौ॥
हितकारी नियमों के पालन का आनन्द स्वतन्त्र लहौ।
वैदिक मतके सार भूतयों दश नियमों का भावकहौ॥
श्रीमद्दयानन्द स्वामी के उपदेशोंका खाताहै।
आदिमूल सबहीका "शंकर" एक समझमें आताहै (४)

(प्रतिभाशाली महापुरुष)

—·—:०:——

भजन ॥ १९ ॥

प्रतिभा शाली संसार का,
उपकार किया करते हैं। टेक:-
गुरुकुल में विद्या पढ़तेहैं, पण्डित्त बन बन कर कढ़ते हैं,
गौरव के गिरिपर चढ़ते हैं, ब्रह्मानन्द अपार का,
पीयूष पिया करतेहैं।
उपकार किया करतेहैं॥
जो भवसागर में बहते हैं, निशिवासर संकट सहतेहैं,
बिन विवेक व्याकुल रहते हैं, उन सबके उद्धारका,
उपदेश दिया करतेहैं।
उपकार किया करतेहैं॥
उद्यमकीविधि सिखासिखाकर, उन्नतिकामुख दिखादिखाकर,
लाखों लेखे लिखा लिखा कर, भारी भार सुधारका,

शिर धार लिया करतेहैं।
उपकार किया करतेहैं ॥
सुखसाधन की रीति चला कर, भोलोंका भरपूर भला कर,
निज कुल कीरति को विमला कर, शंकर ज्ञानागारका,
फलपाय जिया करतेहैं।
उपकार किया करते हैं ॥

----:०:----

धर्म्म बीर पंडित लेखराम जी का शोक सम्बाद।

——:०:——

मलिन्दपाद छन्द (२०)

——:०:——

(धर्म्मबीर की प्रार्थना)

——:०:——

एक अविनाशी अजन्मा विश्वधर धाता तुही।
लोक नायक न्यायकारी तू पिता माता तुही ॥
धर्म्म रक्षक तापहारी भक्त जन त्राता तुही।
सर्व मंगलमूल शंकर सर्व सुख दाता तुही ॥
यों सदा सद्भाव से शिर नाय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

(पंडितजीका धार्मिकबीरोंकीप्रणालीसे उत्तेजितहोना)

——:०:——

धर्म्म धारी बीर बैरी से कभी डरते नहीं।
पुण्य के प्रतिकूल पूजा पाप की करते नहीं ॥

तामसी मत मानमन में मोह को भरते नहीं ।
जालियों में जन्म लैने के लिये मरते नहीं ॥
बस इसी उद्देश को उर लाय पंडित लेखराम ।
तर गये जगदीश के गुण गाय पंडित लेखराम ॥

(पंडितजीकामहामन्तव्य)

-----:०:-----

आलसी के ठौर ठाली साहसी सोते नहीं ।
मूढ़ मंडळ में विवेकी काल को खोते नहीं ॥
भोगियों की भँातियोगी राति दिन रोते नहीं ।
कायरों के पक्षपाती सूरमा होते नहीं ॥
इस महामन्तव्य का फल पाय पंडित लेखराम ।
तर गये जगदीश के गुण गाय पंडित लेखराम ॥

(पंण्डितजीकी योग्यता और कर्त्तव्यपालन)

-----:०:-----

बनगये विद्या विशारद धर्म का धन जोड़कर।
योग का आनन्द लूटा योगियों की होड़कर ॥
मेलका मेला लगाया फूट का शिर फोड़कर ।
खुलपड़े परतन्त्रता के बन्धनों को तोड़कर ॥
श्री दयानन्दर्षि के गहि पाय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीश के गुण गायपंडित लेखराम ॥

(धर्मबीर का धर्मोपदेश)

वेद का उपदेश देते देशमें फिरने लगे ।
दम्भ सारे दुरदशाके घेरमें घिरने लगे ॥

लेखमन माने मतोंपर बज्रसे गिरने लगे।
झक्कड़ोंके झुंड चारौ ओरको चिरने लगे॥
जाल ग्रंथोंमें लगालिविलाय पं० लेखराम।
तरगये जगदीश के गुण पंडित लेखराम॥

——:०००० :——

(वेद विरोधी ग्रंथों का खंडन)

——:०००० :——

पोल खुलते ही पुराणों का महातम हटगया।
बुद्ध की बिधि बँधगई मद जैन मतका घटगया॥
जी जला इंजीलका बिल वायबिलका फटगया।
दम घुटा तौरैत का छलबल ज़बूरी कटगया॥
पड़गये मुसहफ़ के पीछे धाय पं० लेखराम।
तर गये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

(वेद और .कुरआन का विरोध)

——:०००० :——

सामने .कुरआन के ले वेद चारौ अड़गये।
मार मन्त्रों की पड़ीपर आयतों के झड़गये॥
डूबकर बहरे दलाइल में गपोड़े सड़गये।
कुल हदीसों के हवाले भी भमर में पड़गये॥
इस तरह इसलाम का घर ढाय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

आर्यपथिक पं० जी के साथ मुसलमानों का विश्वासघात ।

—:०:—

चिड़गये वैदिक बटोही से मियांसबहारकर ।
चलपड़े अपनी पुरानीचालपै तकरारकर ॥
एकपाजी आमिलामत वेद का स्वीकार कर ।
अन्तको भागा कलेजे में कटारी मारकर ॥
नीचको अपनाय धोखा खाय पंडित लेखराम ।
तरगये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम ॥

(पंडितजीका दैहिकबलिदान)

—:०:—

केशरी परघात गीदड़ की अचानक चलगई ।
कामना विश्वास घाती खर्व खल की फलगई ॥
नाम को इसलामके शिर से बलासी टलगई ।
आगइस ज्वालामुखी छलकी जगतमें जलगई ॥
बनगये बलिदान दलके राय पंडित लेखराम ।
तरगये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम ॥

(पंडितजीकी परलोकयात्रा)

—:०:—

क्या चिकित्साकी चली उर शूलसे गढ़तेरहे ।
प्राणतन को त्यागने की चाल पै चढ़ते रहे ॥

प्रेम पूरित शब्दमुख से अन्त लों कढ़ते रहे।
धर्म्म को धर ध्यान में गुरु मंत्र को पढ़ते रहे॥
चलबसे परलोक में तजकाय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

(पंडितजीकी अन्तिमशिक्षा)

——:०:——

धर्म्म के मगमें अधर्मी से कभी डरनानहीं।
चेतकर चलना कुमारग में क़दम धरनानहीं॥
शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं।
बोध वर्द्धक लेख लिखने में कमी करनानहीं॥
दे मरे हम को मुनासिब राय पंडित लेखराम।
तरगयेजगदीश के गुण गाय पंडित लेखराम॥

(पंडितजीके शोकमें मातादिकारोना)

——:०:——

हो निपूती मा प्रतापी पुत्र को रोने लगी।
धर्म्म पत्नी प्राण प्राणा धार पर खोने लगी॥
शोक से सब साथियों की दुरदशा होने लगी।
मोह माया बेदना के बीजयों बोने लगी॥
हाय बेटा हाय स्वामी हाय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीशके गुण गाय पंडित लेखराम॥

——:०:——

(पुरबासियों का रोना)

-----:०:-----

आ पुकारे लोग प्यारे कल्प भर को मर चले।
दीन भारत वर्ष को बलहीन व्याकुल कर चले॥
धर्म्म कीरति को धरोहर सा धरा पर धर चले।
ब्रह्म कुल के शुद्ध साँचे में चकाचक भर चले॥
कर्म कंचन तीव्रतप से ताय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीश के गुण गाय पंडित लेखराम॥

(पंडितजी की महाशैया)

-----:०:-----

बीर की अरथी उठाकर दीन दुखपाते चले।
जी जले आँसू बहाते ठोकरें खाते चले॥
फूल बरसाते गुणी पद ज्ञानके गाते चले।
सैकड़ों लाहौर बासी शोक उपजाते चले॥
हाय मरघटमें बिराजे आय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीशकेगुण गाय पंडित लेखराम॥

(दाहसार में चिता लगाना)

-----:०:-----

ब्रह्म वादी बीरचरचा ज्ञान की करने लगे।
साधु साधन शीलसमिधा कुंड में भरने लगे॥
धीर के शब को चिता में धीर धरधरने लगे।

काल की करतूतिसे सब सूरमा डरने लगे।।
यों न सोयेथे छपरखटछाय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

(नरमेध और महादाह)

——:०:——

आग दी जलने लगा तनचूर चूना होगया।
हाय रे नरमेध होली का नमूना होगया॥
आ मिली मुनिकी दिवाली दाहदूना होगया।
वीरता का राजमन्दिर आजसूना होगया॥
हा मिले शंकर पितासे जाय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीशके गुण गाय पंडित लेखराम॥

(पंडितजी कानाम औरयश)

——:०:——

शुद्ध ज्ञानागार में गुरुभक्ति भरनेके लिये।
धर्म्मकरि कोकर्म काननमें विचरनेकेलिये॥
वेद का उपदेश चारौ ओरकरने के लिये।
एक शंकरका निरन्तर ध्यान धरने केलिये॥
नाम सुतको देगये यशदाय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीशके गुणगाय पंडित लेखरामं॥

——:०:——

(कुलसपूत)

भजन (२१)

जिन के मात पिता गुरु ज्ञानी । टेक—
वे बालक वैदिक व्रत धारी, साहसके अभिमानी।
हिलमिल उन्नति क्यौंनकरेंगे,अपनी और बिरानी॥
जिन के मात पिता गुरु ज्ञानी ॥
अपरा विद्याकौफलपायौ, गूढ़ परा पहिंचानी ।
सम्वितशील सुधासुख सांचे,सुनत न कपट कहानी॥
जिनके मात पिता गुरु ज्ञानी ॥
आपस में स्वारथ साधन की,होति न ऐंचा तानी ।
काहूने प्रमाद की माया,काहू भांति न जानी ॥
जिन के मात पिता गुरु ज्ञानी ॥
ऐसे शूरन के समूहने, जब जैसी हठठानी ।
"शंकर" तबताके पालन में, करी न आना कानी।
जिन के मात पिता गुरु ज्ञानी ॥

(धर्म्मशील)

भजन (२२)

नीकी करनी संसार में ,
नामी नर कर जाते हैं ॥ टेक ,
जो ध्रुव धर्म बीर होते हैं-पर दुख देख देख रोते हैं-

सो बिशाल संसृत सागर को-पल में तर जाते हैं ॥१॥ नामी० ॥
बृथा काल को खोने वाले-बीज पाप के बोने वाले-
कायर क्रूर कपूत कुचाली-योंहीं मर जाते हैं ॥२॥ नामी० ॥
धर्म कर्म को मर्म न जाने-केवल मनमानी तक ताने-
ऐसे बकवादी समाज में-संशय भर जाते हैं ॥३॥ नामी० ॥
मिट गये नाम नीच कपटिन के-शंकर सुयश शेष हैं तिनके-
जिनके जीवन के अनुगामी-जीव सुघर जाते हैं ॥४॥ नामी०॥

कबित्त (२३)

शंकर के सेवक दुलारे गुरु लोगन के,,
नीति के निकेत निगमागम पढ़त हैं ।
जीवन के चारौ फल चाखन की चाह कर,,
उन्नति की ओर निशि बासर बढ़त हैं ॥
भारत के भूषण प्रताप शील पूषण से,,
जिनकी कृपा से पर दूषण कढ़त हैं ।
ऐसे नर नागर तरेंगे भव सागर को,,
प्यारे परमारथ के पोत पै चढ़त हैं ॥

(शान्ति*शील)

भजन (२४)

अबतौ बाद बिबाद बिसार । टेक,
बीर बहाय जाति जगती पर, प्रेम सुधा की धार ।
धारा में नीकी करनी की, नई नवरिया डार ॥
अबतौ बाद बिबाद बिसार ॥

तू केवट बनता तरनी कौ, दान वेणु कर धार ।
जीवनके वासर पथिकनको, गिन २ पारउतार ॥
अबतौ बाद बिबाद बिसार ॥

पर उपकार भार भर रीते, रहैं न साधन हार ।
वेतसके मिसतोहि मिलेंगे, मनमाने फलचार ॥
अबतौ बाद विबाद विसार ॥
ऐसौही उपदेश देत हैं, वेद पुकार पुकार ।
"शंकर" औसर पै मतचूकै, करलै बेड़ा पार ॥
अबतौ बाद बिबाद बिसार ॥

(प्रमाण पञ्चक)

दोहा छन्द (२५)

(१)

घर सौदा सद्भाव के, खोल धर्म की हाट ।
तर्क तुला लै तोल तू, डार युक्ति के बाट ॥

(२)

लक्षण और प्रमाण विन, बनै न वस्तु विचार।
कल्पित अर्थ अनर्थ को, मूढ़ करैं स्वीकार ॥

(३)

इन्द्रिय द्वारा अर्थ कौ, होय यथारथ ज्ञान ।
सो प्रत्यक्ष प्रमाण है, धीर सुनों धर ध्यान ॥

(४)

समझै पूरे अर्थ को, अंग अधूरे जान ।
सो प्रत्यक्ष प्रमाणकौ, अनुगामी अनुमान ॥

(५)

काटै सीस असत्य कौ, मार सत्य के वाण।
"शंकर" ताके कथनको, समझौ शब्द प्रमाण॥

(चेतावनी)

——:०:——

राजगीत ॥२६॥

जब तलक तू हाथ में मनका न मनका लायगा।
तब तलक इस काठ की माला से क्या फल पायगा॥
भूल कर अजको अजाका आजलों चेरा रहा।
क्या इसी पाखण्ड से परमातमा मिलजायगा॥
धर्म्म का धन छोड़ कर पूँजी बटोरी पाप की।
बस इसी करतूति से धर्म्मातमा कहलायगा॥
चाह की चिनगी से चैंका चैन फिर चितको कहां।
देख धरकर आग पै पारा न ठिक ठहरायगा॥
दान दीनों को न देकर नामका दानी बना।
भोग के भूखे वहां जाकर बता क्या खायगा॥
लोभ लीला के लिये रच रंगशाला राग की।
बोल बहुरंगी रँगीले गीत कबतक गायगा॥
स्वारथी उपकार औरों का कभी करता नहीं।
फिर तुझै संसार सारा किस लिये अपनायगा॥
जो तुझै भाती नहीं सबकी भलाई तो भलां।
क्यों न भोले भाइयों को भूल में भरमायगा॥

प्रेम का जल दे रहा परिवार के आराम को ।
फल नहीं देगा किसी दिन फूल कर मुरझायगा ॥
खेल में खोया लड़कपन भोग में जोबन गया ।
भूल में भागी ज़रा क्या और जीवन आयगा ॥
दूर प्यारे की पुरी है दिन किनारे आचुका ।
चल नहीं तो इस झमेले में पड़ा पछतायगा ॥
कंठ की घर घर सुनेंगे अन्त को घरके खड़े ।
उस घड़ी "शङ्कर" घिरा घर घेर में घबरायगा ॥

भजन ॥२७॥

लुट गयौ धींग धनी धन तेरौ ॥टेक,
मंज़िल दूर पोच रथ पै चढ़, घर से चलौ अबेरौ ।
सूरज अस्त भयौ मारग में, कियौ न रैन बसेरौ ॥
लुट गयौ धींग धनी धन तेरौ,
आधीरात भयानक बन में, तोहि नींद ने घेरौ ।
चपल तुरंग अचानक चौंके, स्यंदन सर में गेरौ ॥
लुट गयौ धींग धनी धन तेरौ,
सूत पूत कीचड़ में कचरौ, जीवित बचौ न चेरौ ।
तू अपनी पूँजी लै भागौ, अटकौ आय लुटेरौ ॥
लुट गयौ धींग धनी धन तेरौ,
छिन में छीन कमाई सारी, रीते हाथ खदेरौ ।
सो न रह्यौ अब जाहि कहतहो, शङ्कर मेरौ मेरौ ॥
लुट गयौ धींग धनी धन तेरौ,

मालती सवैया (२८)

बन्धन वेलि बढ़ावतिहै सुखदा समझै मत सम्पति फीकी।
जीवन पै तज बैर दयाकर जान महौषधि जीवन जीकी ॥
है सबके सुख में अपनौ सुख सिद्ध कहावत है सबहीकी।
लोकप्रबन्ध बिगाड़ न "शंकर" याजगमें करनी करनीकी॥

श्रृंगारिणी छन्द (२९)

गर्वको गाढ़दे लोभको टारदे-क्रोधको काटदे मारकोमार दे-
ज्ञानकी आगिमें मोहकोजारदे-धर्मके सिन्धुमें कर्मकोडारदे-

विमोहा छन्द (३०)

ब्रह्म को जानिये-वेद को मानिये-
दान जो कीजिये-दीन को दीजिये-

(उ प दे श)

लावनी (३१)

सुखदा सिख सीख सखा सब से-
करलेहु सनेह सगाई (टेक)

इतने दिन सोवत बीत गये,अबतौ कुल कायर जागौ।
घिर घोरअधोगति के घरमें,घबराय रहे उठि भागौ॥
बिचरौ सब देशबिदेशनमें,गहि उद्यम आलस त्यागौ।
करिये कछु केवल बातन के,रच रोचकराग न रागौ॥
(उ०) हित साधन में चित राखौ-
बल साहस के फल चाखौ।
चढ़गौरव के गिरि पै बिहरौ,बगराय विवेक बड़ाई।

सुखदा सिख सीख सखा सबसे, करलेहु सनेह सगाई ॥१॥
गुरु मातपितामुनि साधुसुधी, वसुधा धिप के गुण गाऔ।
परिवार सुमित्र मिलापिनमें, मिल प्रेम सुधा बरसाऔ ॥
कविकोविद शिल्पसुजानगुनी, सबके उतसाह बढ़ाऔ।
कर दान दयानिज दासन पै, फिर दीननको अपनाऔ॥
(उ०) शरणागत के दुखटारौ—
अवनीपर नीति पसारौ।
उपदेश गहौ उपकारिन के, तजिये मनकी कुटिलाई।
सुखदा सिखसीख सखा सबसे, करलेहुसनेह सगाई॥२॥
सब जीवनके सुख जीवनमें, अपनौसुख जीवन जानौ
अति सार न स्वारथमें समझौ, परमारथकौ प्रण ठानौ ॥
उर सत्य सनातन धर्मप्रथा, धरिये, न असत्य बखानौ।
मतिहीन मलीन कुचालिनकी, कबहूं मत सम्मति मानौ॥
(उ०) विधि की रचना सब देखौ—
रहि जायन अन्त परेखौ।
मत पंथन के भ्रमजालन में, उरझौ सुरझौ मत भाई।
सुखदा सिख सीख सखा सबसे, करलेहु सनेह सगाई॥३॥
ममता मद मोह कुकर्म्म कथा, व्यभिचार विरोध बिसारौ।
धर पावन पुण्य हुताशन में, छल पातक पुंज पजारौ॥
पढ़ वोध विधायक ग्रंथन को, व्यवहार चरित्र सुधारौ।
तप योग महाव्रत साधसदा, परमातम तत्व विचारौ ॥
(उ०) भवसागर को तरजाओ-
तनत्याग महासुख पाऔ ॥

सुनलेहु मनोहर भाव भरी, कवि "शङ्कर" की कबिताई ।
सुखदा सिख सीख सखा सबसे, करलेहु सनेह सगाई ॥४॥

भजन ॥ ३२ ॥

होगा भारी नाम २
वेदों के पढ़ने पढ़ाने से (टेक)
राजा बनौगे महाराजा बनौगे, शूरों की सेना बढ़ानेसे ।
होगा भारी नाम –२–वेदों के पढ़ने पढ़ानेसे ॥
ऊंचों के आगेन नीचे रहौगे, उद्यम को ऊंचा चढ़ानेसे ।
होगा भारी नाम–२–वेदों के पढ़ने पढ़ानेसे ॥
"शंकर" अनारी न भूखे मरौगे, सेवा को माथे मढ़ानेसे ।
होगा भारी नाम–२--वेदों के पढ़ने पढ़ाने से ॥

भजन ॥ ३३ ॥

जन्म सफल कर लीजिये,
अवसर न बिसारौ ॥ टेक ॥
करसत्सङ्ग कुसंगति त्यागौ, सुमति सुधारस पीजिये,
अवसर न विसारौ ।
जन्म सफल करलीजिये ॥
दीन अनाथन को अपनाऔ, शूरन को सुखदीजिये,
अवसरन विसारौ ।
जन्म सफल करलीजिये ॥
परमरंक भिक्षुक भारत पै, प्रेम पसार पसीजिये,
अवसर न विसारौ ।
जन्म सफल करलीजिये ॥

हिल मिल "शंकर" के गुणगाऔ, बाद बिबाद न कीजिये,
अवसर न विसारौ ।
जन्मसफल करलीजिये ॥

(उपकार पञ्चक)

दोहा ॥ ३४ ॥

प्यारे पर उपकार कर,, भली भलाई जान ।
सब की उन्नति में मिली,, अपनी उन्नति मान् ॥१॥
तनसे सेवा कीजिये,, मन से भलो बिचार ।
धनसे या संसार में,, करिये पर उपकार ॥ २ ॥
वृथा जिये सौ वर्षलों,. कियो न पर उपकार ।
धरणी में धन धर मरौ केवल कुयश पसार ॥ ३ ॥
ऐसी करनी कर सखा,, छल की वानि बिसार ।
तेरी कुल कीरति बढ़ै,, सख पावै संसार ॥ ४ ॥
रे "शंकर" मिट जायंगे,, धवल धाम आराम ।
पै न मिटैगौ कल्पलों,, उपकारी कौ नाम ॥ ५ ॥

भजन ॥ ३५ ॥

खुल खेलौ रही न रोक,
दुविधा दूर भई (टेक)
दुर दुर छुआ छूतके मारे, हैगये छिन्न भिन्न हम सारे,
सत्यानाश भयौ भारत कौ,
शोक शोक हा शोक (१) दुविधा दूर भई ॥
अबतौ प्रेम सुधारस चाखौ, मेल करौ मत भेद न राखौ,

धारौ धीर सुधारौ प्यारे,
लोक और परलोक (२) दुबिधा दूर भई ॥
हिन्दू मुसलमान ईसाई, सब देशी परदेशी भाई,
वैदिक धर्म्म वीर बनजाओ,
वेग हटाय हटोक (३) दुबिधा दूर भई ॥
जो सज्जन समाज में आवै, सो अधिकार यथोचित पावै,
देखें कबलों ढोंग रचेंगे,
"शंकर" से डरपोक (४) दुबिधा दूर भई ॥

(मैत्री)

भजन (३६)

सिख सीखौ मेल मिलाप की,
जल और दूध से भाई (टेक)
पय ने पानी को अपनाया, पानी ने पयमान बढ़ाया,
हिल मिल एक भाव दरसाया, द्रवता गोरस आप की,
समता के साथ बिकाई ॥
जल और दूध से भाई ॥
यों सनेह की बेल बढ़ाई, हित पर हित की भई चढ़ाई,
प्रेम कसौटी बनी कढ़ाई, जांच आंच के ताप की,
दृढ़ता को परखन आई ॥
जल और दूध से भाई ॥
नीर जला प्रिय क्षीर बचाया, दीन दुग्ध व्याकुल अकुलाया,
पावक में गिरने को धाया, मसि कृतघ्नता पापकी,

कुल कीरतिपै न लगाई ॥
जल और दूधसे भाई ॥
मरती बार मिला पुनि पानी, मगन भयौ उरआग सिरानी,
यों शंकर के साथ सयानी, सभा रहैगी आप की,
डारौ मत कपट खटाई ॥
जल और दूधसे भाई ॥

(प्रबोध पञ्चक)

—:०:—

दोहा ॥३७॥

(१)

पहले थोड़ौ सुख मिले फिर दुख होय अपार ।
ऐसे पोच कुकर्म को शंकर बेग बिसार ॥*॥

(२)

तेरौ अथवा औरकौ जामें लाभ न होय ।
ताथोथी करतूति में दुर्लभ आयु न खोय ॥*॥

(३)

जो तू चाहै भ्रम घटै बढ़ै विवेक विचार ।
तौ मादक द्रव्यादि सब खोटे व्यसन बिसार ॥*॥

(४)

जो तू चाहै मोहिसब सज्जन कहैं सपूत ।
तौ ये तीनौ त्याग दै चोरी जारी द्यूत ॥*॥

(५)

अब करने के काम को फिरके लिये न छोड़ ।
उन्नतिशील सुजान के जीवन की बरहोड़ ॥*॥

(प छ ता वा)

---:०:---

भजन (३८)

अब क्या होगा हाय हमारे,
जीवन के बासर बीते (टेक)
साहस बल विवेक हिय हारे, भोग रोग मालाने मारे,
आलसने सब ढंग बिगारे, अंग जराने जीते ॥जी०के० ॥ १ ॥
उपजे ताप तामसी तन में, उमगे मन्द मनोरथ मन में,
मानौ केलि करत काननमें, सिंह भेड़िया चीते॥जी०के०॥२॥
तीनौ पन प्रमाद में खोये, धर्म धार में हाथ न धोये,
"शंकर" बीज पापके बोये, मारग रहे न रीते ॥जी०के०॥३॥

भजन (३९)

जीवन नाहिं नरक में बास। टेक,
पापी पुर प्रतिकूल परौसी, कपटी मित्र कुदास ।
नारि करकसा पूत कुचाली, बन्धु बिरोधी पास ॥
जीवन नाहिं नरक में बास ॥
तन में रोग रहैं बहुतेरे, मिट गये भोग बिलास।
ठौर ठौर खोटी करनी कौ, होत घनौ उपहास ॥
जीवन नाहिं नरक में बास ॥
योग स्वाँति पय पीन बुझाई, चित चातकने प्यास।
ज्ञान भानुबिन मति सरोजनी, कबहुंन करति बिकास॥
जीवन नाहिं नरक में बास ॥

हाय हाय में हायन * बीते, हा बिन पांच[४५] पचास।
बनी न अबलौं स्वर्ग नसेनी, "शंकर" तेरी आस॥
जीवन नाहिं नरक में वास॥

भजन (४०)

खेलत खेल घने दिन बीते। टेक—
हँस २ दाव अनेक लगाये, एकहु बार न जीते।
खेलत खेल घने दिन बीते॥
जुरि मिल लूटलैगये ज्वारी, करि करि मनके चीते।
खेलत खेल घने दिन बीते॥
अबलौं निपट नाशकी मदिरा, रहे मोह बश पीते।
खेलत खेल घने दिन बीते॥
"शंकर" सरबसु हार चले हम, हाथ पसारें रीते।
खेलत खेल घने दिन बीते॥

भजन (४१)

मेरौ नाम नराधम नामी। टेक—
मैं कपूत कुल गुरु कूरन कौ, सब सूमन कौ स्वामी।
मेरे साथ कुचाल चलैगौ, कौन कुमारग गामी॥
मेरौ नाम नराधम नामी॥
ठौर ठौर गुण गावत मेरे, निन्दक नीच हरामी।
चूमत चरण चोर चेरे से, कायर करत गुलामी॥
मेरौ नाम नराधम नामी॥

* हायन (वर्ष) बिन पांच पचास ५०-५=४५=कवि की आयुके।
(कर्णसिंह उपमंत्री)

मानत मोहि कौल कुल भूषण, बीर शिरोमणि वामी।
उपजौ मो समान जारन में, को कचलम्पट कामी ॥
मेरौ नाम नराधम नामी ॥
मन माजी चंचल तुरंगकी, कबहू बाग न थामी।
का बिधि मोहि महा सुख देगौ, शंकर अन्तरयामी ॥
मेरौ नाम नराधम नामी ॥

भजन (४२)

बिन विवेक व्रत कब निबहैंगे ॥ टेक॥
सुन २ तेरी कपट कहानी, गुरु लघु लोग लबार कहैंगे ॥
बिन विवेक व्रत कब निबहैंगे ॥
पोत कलंक कालिमा मुख पै, संग कुसंग प्रसंग रहैंगे ॥
बिन विवेक व्रत कब निबहैंगे ॥
बूड़ैगौ संकट सागर में, कूर कृपा कर कर न गहैंगे ॥
बिन बिवेक व्रत कब निबहैंगे ॥
"शंकर" पड़प्रपंचपावक में, कबहु न दाहकदंभ दहैंगे ॥
बिन विवेक व्रत कब निबहैंगे ॥

राजगीत (४३)

सखा आरम्भ शूरों के अधूड़ काम करते हैं ॥
अभागे आलसी ओछे कहां पूरे उतरते हैं ॥
पड़े टूटी खटोली पर अलापैं राग उन्नति के ॥
सुनौ पर पैर उद्यमके अखाड़े में न धरते हैं ॥
लड़ें दिन रात आपस में पढ़ें परचे लड़ाई के ॥

लड़ाकू हैं न संगर के समाचारों से डरते हैं ॥
भला वह कौन जन्मा है जो होनी को हटा देगा ॥
इसी ढब के गपोड़ों से न किस के कान भरते हैं ॥
कथा बांचें विगोते हैं वृथा विद्या विचारी को ॥
मतों के जाल फैलाकर पराया माल हरते हैं ॥
दयाकर देव "शंकर" ने दिखाया अंत वेदोंका ॥
रँगीले ब्रह्म बनबन कर सदा चरते विचरते हैं ॥

(रोदन)

----:०:----

भजन ॥४४॥

अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥टेक॥

भारत जननी के भरतार, कोविद विद्या के भंडार ।
अगणित योगी ज्ञानाधार, हाकित कीरति छोड़ सिधाये॥
अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥१॥

सज्जन संवित शील उदार, उन्नति युवती के शृंगार ।
करिकरि अद्भुत आविष्कार, अवनी के उरमाहिं समाये ॥
अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥२॥

जिनकी रचनाके उपहार, जगने जाने हिय के हार ।
तिनके कुलकी कुगतिनिहार, अँखियाँ बैरी भी भरलाये ॥

अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥३॥

घर घर घोर दरिद्र अपार, सम्पति पहुँची सागरपार ।
भागे सारे सद् ब्यापार, उद्यम अपने भये पराये ॥
अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥४॥

भूखे साथ लिये परिवार, मागें भीख पुकार पुकार ।
महँगी मारै बारम्बार , दुखिया कालब्याल ने खाये॥
अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥५॥

गहि गहि कपट कठोर कुठार, गुरुजन बनबैठे जड़जार ।
कल्पित कुमत प्रचार प्रचार, सबने बलिपशुबीरबनाये ॥
अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥६॥

कोरी कंजर डौम चमार, लोभी लम्पट लंठ लवार ।
पूरे पाखंडी बटमार , बंचक संत महंत कहाये ॥
अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥७॥

"शङ्कर" वैदिक धर्म्म विसार, भूले करना परउपकार ।
खोये जीवनके फल चार, हमने केवल पाप कमाये ॥
अब कब होगा हाय सुधार ।
देखौ दुखदाई दिन आये ॥८॥

(मन्मुखिया)

——:०:——

भजन ॥ ४५ ॥

क्योंजी इस ओछी उन्नति पै,
इतने इतराते हौ (टेक)
खोटे मारग में चलतेहौ, मरियाद बिसार उछलतेहौ,
वैदिकव्रत पालन करनेको,
बन्धन बतलातेहौ (१) इतने इतरातेहौ ॥
पल खातेहौ मदपीतेहौ, बनजार जगत में जीतेहौ,
कुलबोर कपूत कमीनोंकी,
करतूति दिखातेहौ (२) इतने इतरातेहौ ॥
धनपाय निशंक बिचरतेहौ, जो मनमानेसो करतेहौ,
बलहीन बिचारे दीनोंको,
दिन रात सतातेहौ (३) इतने इतरातेहौ ॥
अनमोल कालको खोतेहौ, शंकर की शरण न होतेहौ,
समझौ पीछे पछताओगे,
क्या गाल बजातेहौ (४) इतने इतरातेहौ ॥

(पा त की)

भजन (४६)

कच लम्पट कूर कुचालिया ।
कुलबोर कपूत कहायौ ॥ टेक ॥
कवि कुल तिलक उपाधि न पाई। बीरन में बगरी न बड़ाई॥

सम्पति की निधि हाथ न आई। रे जग बंचक जालिया,
जड़ क्यों जननी ने जायौ ॥
कुल बोर कपूत कहायौ ॥
उर वैदिक उपदेश न धारे। मंगल मूल सुकर्म बिसारे॥
उद्यम के सब ढंग बिगारे। बन बैठौ देवालिया,
छलके वल कौ फल पायौ ॥
कुल बोर कपूत कहायौ ॥
घर दारुण दरिद्र ने घेरौ। घोर नरक में पाय बसेरौ॥
मोधू भयौ पेट कौ चेरौ। भिक्षुक दीन दुकालिया,
ठग नायक नाम धरायौ ॥
कुल बोर कपूत कहायौ ॥
अबुध आलसीअधम अभागी।अवगुण गेहअनीति नत्यागी॥
रह्यौ न 'शंकर' कौ अनुरागी। धिक धिक अष्टकपालिया,
काहू के काम न आयौ ॥
कुल बोर कपूत कहाओ ॥

(मोक्ष मिलने में कठिनता)

——:०:——

भजन ॥४७॥

या भवसागर को तुम।
कैसे तरजाओगे भाई (टेक)
इत बन्धन उत मुक्ति किनारौ, भौतिक तारतम्य भण्डारौ,
प्रकृति प्रभाव भरौ जल खारी,

विधि गति गहराई (१) या० भ० सा० तु० कै० त० जा० भाई।
द्वन्द ज्वारभाटा झकझोरें, उमड़ें विविधि विकार हिलोरें,
जड़ चेतन संघात बतासे,
छिट के छवि छाई (२) या० भ० सा० तु० कै० त० जा० भाई।
कढ़त कर्म्म फल फेन घनेरे, घूमत भोग भ्रमर बहुतेरे,
दुख वड़वानल ने धरखाई,
सुख सीतलताई (३) या० भ० सा० तु० कै० त० जा० भाई।
काल विभाग नाग फुंकारें, योनि अनेक मगर मुख फारें,
अघदल कच्छ मच्छ मिल घेरें,
सुध बुध विसराई (४) या भ० सा० तु० कै० त० जा० भाई।
बूड़ मरे बलहीन बिचारे, साधक साधन करकर हारे,
लपकें तैरा तोंवा धारी,
पै न पार पाई (५) या भ० सा० तु० कै० त० जा० भाई।
ऊँचे योग सिद्धि गिरि टीले, तिन पर ऊलें साधु अड़ीले,
गिरे गमाय पुराय की पूँजी,
फिर न हाथ आई (६) या भ० सा० तु० कै० त० जा० भाई।
धर्म्म धूम बोहित बानि आवै, "शङ्कर" ज्ञान मलाह चलावै,
तापर बैठ चलोगे तबहू,
पूरी कठिनाई (७) या० भ० सा० तु० कै० त० जा० भाई॥

(बनावटी साधु)

---:o:---

भजन ॥ ४८ ॥

रँग रहा रागके रंग में।
तू कैसा वैरागी है ॥ टेक ॥
पामर पोच कर्म करता है। कभी न पापों से डरताहै ॥

रच पाखंड पेट भरताहै। काटै काल कुसंग में,
मति हीन मंद भागीहै ॥
तू कैसा बैरागी है ॥
घर घर धूनी आग पजारै। भरु भर चिलम चरसकी झारै ॥
गाल बजाय गपोड़े मारै। ध्यान रहै हुरदंगमें,
छलकी ज्वालाजागी है ॥
तू कैसा वैरागी है ॥
जोर ज़मात महंत कहायौ। गुंडन को अज्ञान गहायौं ॥
मदबारिधिमेंमोद़बहायौ।मनकीमालिनउमंगमें,
बिपरीत लगन लागीहै ॥
तू कैसा वैरागी है ॥
योग समाधि लगायनजाने। परम सिद्ध अपनेको माने॥
औरनके गुण दोष बखाने। भूलभरी चित भंग में,
सिख'शंकर'कीत्यागी है॥
तू कैसा वैरागी है ॥

(दाम्भिक अभिमान)

——:०:——

भजन (४९)
अतुलित अभिमान।
कुल कपूत करते हैं ॥ टेक ॥
बन व्यालन के गुरुभाई। उगलें विष जोर अथाई॥
करें परहित पय पान।
कुल कपूत करते हैं ॥

गुरु लोगन को जड़ जाने । अपने मन को मनु माने ॥
निपट नट खट नादान ।
कुल कपूत करते हैं ॥
लघु लम्पट लंठ प्रमादी। ठगिया कपटी कटुबादी॥
बने व्रत शील सुजान ।
कुल कपूत करते हैं ॥
अनभिज्ञ अकारण क्रोधी । अधमाधम धर्म्म विरोधी॥
सुनै संठन की तान ।
कुल कपूत करते हैं ॥
खलखर्ब कलंकित कामी।अतिनीचनिरंकुश नामी॥
तजें कब कुमति कुबान ।
कुल कपूत करते हैं ॥
निगमागम निन्दक संडा । कर केवल बाद वितंडा॥
निवल के कतरें कान ।
कुल कपूत करते हैं ॥
अप कीरतिका रस चाखें। गहि स्वारथ को शठराखें॥
सुआ की सी पहिचान ।
कुल कपूत करते हैं ॥
इन पापिन की सुधि लीजै । सबको सुखदा सिखदीजै ॥
सुनौ 'शंकर' भगवान ।
कुल कपूत करते हैं ॥

(संशयात्मा)

---:०:---

भजन ॥ ६० ॥

हमने संसार असार को,
छोड़ापर छोड़ न पाया ॥टेक॥

करसत्संग चरित्र सुधारे । भोगबिलास बिसारे सारे ॥
रहे लोक लीला से न्यारे । भार बिचार कुठारको,
भ्रम का शिर फोड़ न पाया ॥
छोड़ापर छोड़ न पाया ॥ १ ॥

मेल समोद महाव्रत मनमें । धर मुनि वेष बसे काननमें ॥
ध्यान लगाय योग साधन में । मथकर ज्ञानागारको,
पीयूष, निचोड़ न पाया ॥
छोड़ापर छोड़ न पाया ॥२॥

पांचौं भूतों को पहिचाना। मिला जीवकाठीक ठिकाना॥
जड़ चेतन मय सब जग जाना । अविनाशी करतारको,
अपने में जोड़ न पाया ॥
छोड़ापर छोड़ न पाया॥३॥

परमसिद्ध ऋषिराज कहाये। नित सुकर्म्म सागरमें न्हाये॥
अबतौ दिवस अंतके आये । जन्म मरण के तारको,
कवि "शंकर" तोड़ न पाया ॥
छोड़ा पर छोड़ न पाया ॥४॥

---:०:---

(शूरों का संग्राम)

—:०:—

रूप घनाक्षरी कवित्त ।।५१।।

तोरि तोरि स्यदन बिदारैं हय हाथिन को,
घेर घेर मारैं बीर बैरिन को बारबार ।
रुंडन के झुंड गज सुंडन को धारधार,
चारौ दिश धावत पुकारैं मुंड मारमार ।।
"शंकर" कराल कर बालन के खेत माहिं,
खेलैं भट खल भीरु भागैं हिय हारहार ।
काल के से दूत भिरैं संगर में राजपूत,
लत्थपत्थ लोथन पै लोथनको डारडार।।*।।

(बीरोचित उपदेश)

—:०:—

भजन (५२)

गुण गण शूरों के धारिये ,
हथियार पकड़ना सीखौ (टेक)
सिंह भेड़ियों से डरते हौ ।। भेड़ों का भुरता करते हौ ।।
मांस महोदर में भरतेहौ । बोदी बान बिसारिये,
सुधरौ न बिगड़ना सीखौ ।।
हथियार पकड़ना सीखौ ।।
अब तक रहे बिषय विष पीते । भूलौ दिन बीते सो बीते ।।

* क्या अब ऐसे बीर हैं

चेतौ करलो मन के चीते । कुलकीरति बिस्तारिये ,
मत घर में लड़ना सीखौ ॥
हथियार पकड़ना सीखो ॥
जिस पापी प्रतिभटको पाऔ।मारौताहि कितुममर जाऔ ॥
पर मुख मोड़ न पीठ दिखाऔ । भीम नाद ललकारिये ,
अटकी में अड़ना सीखौ ॥
हथियार पकड़ना सीखौ ॥
हौ यदि पूत पिता नामी के । दास बनौ अन्तरयामी के ।
"शंकर" ऐडवर्ड स्वामी के । रिपु रण में संहारिये,
लाखों में लड़ना सीखौ ॥
हथियार पकड़ना सीखौ ॥

(कु दे व)

---:o:---

भजन ॥ ५३ ॥

इनको अबहु न आवतिलाज (टेक)
घेरलिये आलस्य असुरने, दीन कुदेव समाज ।
धन चिंता चुड़ेल चढ़बैठी, कढ़ी कोढ़में खाज ॥
इनको अबहु न आवतिलाज ॥
दारुण दम्भ विशाल दुर्गपर, पड़गई दुर्गतिगाज ।
उद्यमहीन महादुख भोगें, दूरभये सुखसाज ॥
इन को अबहु न आवतिलाज ॥
डूबौ अपयश के प्रवाह में,मायिक जालजहाज ।

केवलकूट कपट के कारण, विगड़गये सब काज ॥
इनको अवहु न आवातिलाज ॥
व्याकुलघरघर मांगत डोलें, मुठीमुठी भरनाज ।
चुपरहि तेरी कौन सुनैगौ, रे "शंकर" कविराज ॥
इनको अवहु न आवतिलाज ॥

(भिखारी भारत)

राग देश (५४)

भिखारी बन बैठौ भैया भारत देश (टेक)
व्याकुल असनबसन बिन भोगे, निशि दिन कठिनकलेश ।
भिखारी बन बैठौ भैया भारत देश ॥
सुख साधन प्रमाद पावक में सब कर गये प्रवेश।
भूलौ सुन पाखंड खंड के, अंड बंड उपदेश ॥
भिखारी बन बैठौ भैया भारत देश ॥
दै मारौ आलस्य असुरने, गहिशुभ गुण गण केश ।
रंक भयौ अब कौन कहैगौ, याहि निशंक नरेश ॥
भिखारी बन बैठौ भैया भारत देश ॥
छोड़गई प्राचीन प्रतिष्ठा, गौरव रह्यौ न लेश।
"शंकर" घोर अमंगल टारौ, मंगल मूल महेश ॥
भिखारी बन बैठौ भैया भारत देश ॥

भजन (५५)

लुटगया न पूंजी पासहै,
भारत भूखा मरता है (टेक)

जोथा नव खराडों में नामी, द्वीप रहे जिसके अनुगामी,
सोसारे देशों का स्वामी, अब औरों का दास है,
देखौ कैसा डरताहै।
भारत भूखा मरताहै ॥ १ ॥
बलबिन कौन रखावै घरको, विद्या बटगई इधर उधरको,
सम्पति फांदगई सागरको, कोरा रंक निरास है,
हापेट नहीं भरताहै।
भारत भूखा मरताहै ॥ २ ॥
बीती बातों को रोताहै, बार बार व्याकुल होताहै,
शोक विसार कहाँ सोताहै, घोर नरक में वासहै,
दुर दिन पूरे करता है।
भारत भूखा मरता है ॥ ३ ॥
यह बालक जानेथा जिसको, सोपागल कहता है इसको,
'शंकर' समझावै किस किसको, क्या अद्भुत उपहासहै,
बिन कहे नहीं सरता है।
भारत भूखा मरता है ॥ ४ ॥

(भारत और बलायत)

भजन (५६)

दईमारे भारत होरी है, दईमारे ॥ टेक ॥
तू अतिरंक बलायतरानी, तू कारौहैवहगोरी है ॥ दईमारे०
तू दारुण दरिद्रकौ दादौ वह धनधनेश की छोरीहै॥दईमारे०
तू बूढ़ौबलहीन भिखारी वहसबला पीनपठोरीहै ॥ दईमारे०

तू आलस ऊजड़कौउल्लू वहसाहस चन्द्रचकोरीहै।दईमारे०
तू परिताप तलुकौ पीपा वहसुखरसभरी कमोरीहै।दईमारे०
तू अपनोंघर वार लुटावै वह औरनकी घरफोरीहै। दईमारे
तू केवल वाहीकौचेरौ उन जग से यारी जोरीहै। दईमारे०
अपनौ रुधिरआपतू पीवै इनसबकी तीतनिचोरीहै। दईमारे०
तू नाचे वह तोहि नचावै तू कठपुतरा वहडोरी है।दईमारे०
मैली पाग पिछौरी तेरी वह गौन गसी रँग बोरीहै॥ दईमारे०
तेरौमान मथै कलकत्ता वहलंडनकी झकझोरीहै। दईमारे०
तू साहिब'शंकर'को माने वह गिरजाकीमिसमोरीहै। दईमारे०

(दरिद्रता अर्थात् कंगाली)

--:o:--

भजन ॥ ५७ ॥

कंगाली में कंगाल के।

सब ढंग बिगड़ जाते हैं (टेक)

जिस के दिन बोदे आते हैं। सुख प्रद भोग भाग जाते हैं॥
संशय नौच नौच खाते हैं। उस कुलीन कुल पाल के।

शुभ लक्षण झड़जाते हैं।

सब ढंग बिगड़ जाते हैं॥ १॥

घर के घोर कष्ट सहते हैं। भूखे रोष भरे रहते हैं॥
कहनी अनकहनी कहते हैं। मुखिया जी बिन माल के।

सकुचाय सुकड़ जाते हैं।

सब ढंग बिगड़ जाते हैं॥ २॥

प्यारे प्यार नहीं करते हैं। मित्र मांगने से डरते हैं॥

नातेदार नाम धरते हैं। कब तब रोटी दाल के।
जब लाले पड़जाते हैं।
सब ढंग बिगड़ जाते हैं ॥ ३ ॥

दूर न दीन दशा होती है। लघुता लोक लाज खोती है॥
प्रतिभा सुधि बिहाय रोतीहै। 'शंकर' धर्म्म मराल के।
व्रत पंख उखड़ जाते हैं।
सब ढंग बिगड़ जाते हैं ॥ ४ ॥

(रौर व नर्क)

--:०:--

भजन (५८)

रौरव नरक निहारौ भैया। टेक,
जाय बसे परलोक पिता दुख, भोगति बूढ़ी मैया॥
करति निरादर बात बात पर, गारी देति लुगैया ॥
रौरव नरक निहारौ भैया॥

लड़ लड़ मांगें पूत पतोहू, चांदी के चिल कैया॥
धर धर नाम करें पुर बासी, चारौ ओर चबैया ॥
रौरव नरक निहारौ भैया॥

देख डरौ संकट सागर को, उद्यम खर्ब खिवैया ॥
बूड़िगई चित भंग भमर में, लोक लाज की नैया॥
रौरव नरक निहारौ भैया॥

नातदार मित्र मुरिबैठे, कोऊ न धीर धरैया ॥
बिगड़ गये सब खेल हमारे, शंकर विना रुपैया ॥
रौरव नरक निहारौ भैया॥ ४ ॥

(अ ना थ)

---:०:---

भजन (५९)

हम हाय अभागे दीन हैं,
तुम दीन बन्धु बन जाओ (टेक)
हा दारुण दुकाल के मारे, मात पिता मर गये हमारे,
व्याकुल हैं हम बालक सारे, भूखे साधन हीन हैं,
कर अन्न दान अपनाओ ॥
तुम दीन बन्धु बन जाओ ॥
दैव कोप ने क्लेश गहे हैं, हाड़ मांस बिन शेष रहे हैं,
अबलों कष्ट अनेक सहे हैं, सूखे सर के मीन हैं,
सुख नीर बीर बरसाओ ॥
तुम दीन बन्धु बन जाओ ॥
निश दिन रोटी को रोते हैं, बिन पट भूतल पै सोते हैं,
तड़प तड़प जीवन खोते हैं, निरबल मन्द मलीन हैं,
पालन कर प्राण बचाओ ॥
तुम दीन बन्धु बन जाओ ॥
देव दयानिधि नेक निहारो, बाधक विपति काल को टारो,
जग में कल कीरति विस्तारो, हा हा हम आधीन हैं,
'शंकर' पर पालक आओ ॥
तुम दीन बन्धु बन जाओ ॥

---:०:---

(बु ढ़ा पा)

---:o:---

भजन (६०)

कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ (टेक)

बल बिन अंग भये सब ढीले, सुन्दर रूप नसायौ।
पटके गाल गिरे दाँतन कौ, केशन पै रँग छायौ॥
कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ॥

हाले शीश कमान भई कटि, टाँगनहूँ बल खायौ॥
काँपें हाथ वोदरीके बल, डग मग चाल चलायौ॥
कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ॥

ऊंचो सुनैं धूँधरौ दीखै, वस्तु बोध हलकायौ।
मन में भूल भरी त्यौं तनमें, रोग समूह समायौ॥
कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ॥

ढील भयौ बेडौल डोकरा, नाम खोय पद पायौ।
नाना आदि वाल मण्डलमें, नाना भांति कहायौ।
कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ॥

नातेदार कुटम्ब परौसी, सब ने मान घटायौ।
कढ़त न प्राण पेट पानीने, घर घर नाच नचायौ॥
कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ॥

पास न झाँकत पूत पतोहू, पौरी में पधरायौ।
बूंद बूंद जल टूक टूक को, तांस तांस तरसायौ॥
कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ॥

आज घोर संकट सागरमें, सिर धुनि धुनिपछ्तायौ।
केवल कुल पालौपर प्यारे, 'शंकर' को न रिझायौ॥
कैसौ कठिन बुढ़ापौ आयौ॥

भजन (६१)

कहां गये वे दिन बुढ़िया बोल ॥टेक॥
तब तू धारत ही या तन पै, सुन्दर रूप अतोल।
अबतौ जंग जराकी लागी, उड़गयौ जोबन झोल॥
कहां गये वे दिन बुढ़िया बोल॥
स्वेत भये सारे कचकारे, पटके कलित कपोल।
भूल गये नयना कमनैती, झूल गये कुचगोल॥
कहां गये वे दिन बुढ़िया बोल॥
जिन पै वारतहे जीवन धन, मनकी खिड़की खोल।
आज न ताकत तिन अंगनको, ये रसिया बिनमोल॥
कहां गये वे दिन बुढ़िया बोल॥
अबक्यों डगमगाति डोलतिहै, इतउत डामाडोल।
सबतज भज "शङ्कर" स्वामी को, पीट प्रेम कौ ढोल॥
कहां गये वे दिन बुढ़िया बोल॥

(मृत्यु की सूचना)

——:०:——

भजन ॥६२॥

साँची मान सहेली परसों,
पीतम लैवे आवैगौरी (टेक)
मात पिता भाई भौजाई। सबसों राखि सनेह सगाई॥

दो दिन हिल मिल काट वहां से।
फिर को तोहि पठावैगौरी [१] साँ० मा० स० प० पी० लै० आ०
अबकौ छेता नाहिं टरैगौ। जानौ पिय के संग परैगौ॥
हम सबको तेरे बिछुरन कौ।
दारुण शोक सतावैगौरी [२] साँ मा० स० प०पी०लै० आ०
चलने की तैयारी करले। तोशा बाँध गैलको धरले॥
हालाहाल विदा की बिरियां।
को पकवान बनावैगौरी [३] साँ० मा० स०प० पी० लै०आ०
पुर बाहरलों पीहर वारे। रोबत साथ चलेंगे सारे॥
"शङ्कर" आगे आगे तेरौ।
डोला मचकत जावैगौरी [४] साँ० मा० स० प०पी० लै०आ०

(म हा नि द्रा)

भजन॥ ६३॥

अरी उठ खेल हमारे सङ्ग (टेक)
आँखें खोल बोल अलबेली उर उपजायउमङ्ग।
ऐसौ खेल पसारे सहेली होय अलख लख दङ्ग॥
अरी उठ खेल हमारे सङ्ग॥ १॥
करि केहरि कपोत काकोदर कोकिल कीर कुरङ्ग।
कलश कञ्ज कोदण्ड कलाधर कर सबको रसभङ्ग॥
अरी उठखेल हमारे सङ्ग॥ २॥
सेज बिसार धरापर पौढ़ी उठत न एकहु अङ्ग।
कलित कलेवर कौ करडारौ क्यों बिन कोप कुढङ्ग॥
अरी उठ खेल हमारे सङ्ग॥ ३॥

अस्त भयौ बगराय ताप तम "शङ्कर" मोद पतङ्ग ।
मुद गये शोक सरोजकोश में प्रेमिनके मन भृङ्ग ॥
अरी उठ खेल हमारे संग ॥ ४ ॥

(मरण शोक)

---:०:---

भजन ॥६४॥

घर को छोड़ गयौ घर वारौ । टेक,

बारह बाट आज कर डारौ" अपनौ कुनबा सारौ ।
भोग विलास बिसार अकेलौ ,, आप निशंक सिधारौ ॥
घर को छोड़ गयौ घर वारौ ॥ १ ॥

शोभा दूर भई बाखर की ,, धाय धसौ अंधियारौ ।
चारौ ओर उदासी छाई ,, दिपत न एकहु द्वारौ ॥
घर को छोड़ गयौ घर बारौ ॥ २ ॥

आऔरे मिल मित्र मिलापी ,, इत उत खोज निहारौ ।
कौन देश में जाय विराजौ ,, कौन गैल गहि प्यारौ ॥
घर को छोड़ गयौ घर वारौ ॥ ३ ॥

अब काहू विधि नांहिं मिलैगौ " मिट गयौ मेल हमारौ
"शंकर" यासूने मन्दिर को ,, धीरज धार पजारौ ॥
घर को छोड़ गयौ घर वारौ ॥ ४ ॥

(प्रयाणपञ्चक)

मालती सवैया (६५)

साधरहीं शिशुता जबलौंतबलौं शिशु मण्डलमें मिल खेले।
जोबनजागतही सुखभोगन में मनके सब साधन मेले ॥

हाय जरा अब आयचढ़ी रसभंग भयौ दुखदारुण झेले ।
"शंकर" आजसमाजविसारचले हमहाथपसारअकेले ॥१॥
छोड़ भयानक भोगनको बनमें बस फूलफली फल खाते ।
कर्म्म सुधार महाव्रतधार निशंक समोद सभाधिलगाते ॥
याबिधि "शंकर" को अपनाय सनाथकहाय सदासुखपाते।
सोशुभऔसर वीतगयौ अबतौ हमहाथचले पछताते ॥ २॥
ढोंगअनेक रचे हमने गुरु लोगनकी मरियाद बिगोई ।
याछलके बलकी प्रभुता पर "शंकर" वेदनकी विधि रोई॥
गैलगही कुलबोरनकी सब आयु विलासिनमें बस खोई ।
वीतगये दिनजीवनके अबसाथचले अघऔरनकोई ॥ ३ ॥
दासबने लघुलोगन के पर सेवक "शंकर" के न कहाये ।
लालचके बस लेख लिखे कविताकर कूरन के गुणगाये॥
डूबतहैं भवसागर में अब औरन के कछु काम न आये।
केबल पापकमाय चलेहमजीवनके फलचार न पाये ॥४॥
पण्डित राजबने हम "शंकर" मूढ़नमें मिल मारगपोड़े ।
भोगबिलास बसे मनमें निगमागम के व्रतबन्धन तोड़े ॥
रंक नरेश निशंक ठगे सब ढंगनके रस रंग निचोड़े ।
अन्तभयौ अबजीवनकौतनत्यागचलेपरपाप न छोड़े ॥५॥

(बाल बिवाह)

——:०:——

दोहा ॥६६॥

बगरौ बाल बिवाह बन, सर्व नाश कौ जाल ।
फर फरात यामें फिरै, दम्पति धर्म्म मराल ॥

भजन ॥६७॥

बिषधारी बाल बिवाह ।

डस गयौ भारतको ॥टेक॥

सात सालकी वरनी वारी । अठ बरसौ बर निपट अनारी ॥

इनहूं ते लघु और घनेरे,

घर घर घरनी नाह (१) डस गयौ भारतको,

लरिकाई कौ अन्त न आयौ । बालकसीने बालक जायौ ॥

दुलहिनको सुहागसागरकी,

मानौ मिलगई थाह (२) डस गयौ भारत को,

अब घरधीर निहारौ तिनको । करगई रांड सीतला जिनको ॥

वे नवला बैधब्य धर्म्म कौ,

कैसें करें निबाह (३) डस गयौ भारतको,

सर्व नाश ने शोक पसारौ । हायखपुष्प भये फल चारौ ॥

"शङ्कर" हम सबने सुधारकी,

अबलौं गही न राह (४) डस गयौ भारतको,

(बिधवा बिलाप)

——:०:——

(६८)

सारी सहैं शोक सन्ताप । व्याकुल बिधवा करें बिलाप ॥
एक ठौर मिल बैठीं पाँच । उरमें बार बिरह की आँच ॥
बोली एक गह्यो किन हाथ । भांभर भरीं कौनके साथ ॥
कैसे व्यांह भयौ सुधि नाहिं । बसै बासनासी मन माहिं ॥

औरन सों सुन जानी हाय । पियको गई सीतला खाय ॥
बेचल बसे अयानी छोड़ । आयौ जोबन मांगै जोड़ ॥
कोप काम कौ सह्यो नजाय । चित चंचलपैरह्यो नजाय ॥
कितहू खोज लेहुं सुखसाज । जो पै पड़े लाज पै गाज ॥
बोलीरांड दूसरी रोय । यों मन मानी कैसे होय ॥
जोकर कोप सतावै तोहि । सोजड़ मार मरोरै मोहि ॥
गौनें भयें भये दिन चार । गये अमरपुर प्राणाधार ॥
ज़रौ सुहाग पिया के संग । तरसत रहे अछूते अंग ॥
तबही ते अबलों बेचैन । मैं दुख भोगति हूं दिन रैन ॥
जेठ और देवर की जोय । जागैं सुख सज्जन पै सोय ॥
मैं उनके रति चिन्हं निहार । रोबति रहूं मसोसा मार ॥
कबहू यों समझावै सास । करजप दान धर्म उपवास ॥
सुनसुन वा बुढ़िया के बोल । मन नें कहूंन छाती छोल ॥
जब कबहू मन भरै उड़ान । रोकै लोक लाज कुलकान ॥
बोली तरुण तीसरी तीय । राम रँड़ापौ जारै जीय ॥
थोड़ौसौ सुख भोग भुगाय । पीतम रण में जूझे जाय ॥
जीबति मोहि नरक में डार । आप गये सुर लोक सिधार ॥
पल में हाय गयौ मिट मोद । कोखन फूली भरीन गोद ॥
पयाबिन पीन पयोधर मोर । चूंसै कौन कंचुकी छोर ॥
शोक बढ़ावै सूनी सेज । रेखल काल मौत को भेज ॥
चौथी बिधवा उठी पुकार । जीवन भार बिना भरतार ॥
पीहर काल मौत ससुरार । संकट सागर सौ संसार ॥
पल पल बाढ़ै पूरी पीर । को बिन कंथ बँधावै धीर ॥

सब अनखाय कहैं कुलबोर। फटै नहा हिय कुलिश कठोर ॥
हम कुल बोर किधौं वे रांड़। जिनकी भई किराकिरी खाँड़॥
बनें अछूती छूवीं छिनार। गर्भ गिरावैं बारम्बार ॥
बूढे देख न पावैं देह। करैं धींग धग्गड़ सों नेह ॥
जाति कुजाति मेल अनमेल। सब को ते कर खेलें खेल॥
भौजी कौ देवर पै प्यार। सारी जीजा की सरदार ॥
वे बस लोक लाज को छेक। रण्डा रण्डी भईं अनेक ॥
कोई भगतिन कातिक न्हाय। पौ फाटें मन्दिर में जाय॥
पूजें ताहि पुजारी लोग। बाल भोग दे बाला भोग ॥
श्री गुरु देव पुरोहित सन्त। पण्डित माया रचैं अनन्त॥
बेटी कहें करें उपदेश। निरखें कटि कुच आनन केश ॥
छल कर छाप लगावै कोइ। तन कौ कहूं समर्पण होइ ॥
कोई हरिकी लगन लगाय। तारक तीरथ पै लेजाय ॥
जन्म जन्म के पातक टार। ठोकर मार करै उद्धार॥
बैठ धर्म टाटी की ओट। यों मतवार मारैं चोट ॥
बिटिया बूआ बहिन बनाय। मिलैं पड़ौसी प्रेम जनाय॥
धर्म शील भाई "बा" हाय। जब तब दुख टारैं उर लाय॥
देवर जेठ ससुर जेठौत। जा बिधवाकी मागें मौत ॥
पर जब गहें धर्म की राह। चारौ करें चौगुनी चाह ॥
वेद वाद में बसै लवेद। सब जाने पर खूलै न भेद ॥
यों सब के दुख टारे जायँ। कच्चे बच्चे मारे जायँ ॥
बिधवा कहै पांचवीं रोय। चुप चुप लाज न अपनी खोय॥
बीबी वृथा करै क्यों रोष। इनको नाहिं नेकहू दोष ॥

ऐसी कौन नवेली वाम । रज राखे पर जीतै काम ॥
वैरी बुरौ रंडापौ रोग । याकी औषधि एक नियोग ॥
ता बिन रंडन कोसुखनाहिं।दारुण दुख भोगे जगमाहिं ॥
धर्म नाम धारी अन्धेर । धर धर मारै हे हरि हेर ॥
पूरे पापी कहैं पुकार । दिन काटौ सुख भोग विसार ॥
इन अन्यायिन कौ अन्याय । अब तौ सह्यो न देखौ जाय॥
अपने करैं अनेक विवाह । हमरे लिये एक ही नाह ॥
मानें या अनीति को नीति॥ देखौ इन की औंधी रीति ॥
ये सब संठपाप के दास । करिहैं घोर नर्क में बास ॥
रंडिया दुखियन की सुनटेर। कर दुख दूर दई दिन फेर ॥
कबलौं हाय रहैं धर मौन ।तो बिन हितू हमारौ कौन ॥
आयौ बसन्त अरे करतार । हमको मारकि संकट टार॥

भजन (६९)

बिधवन की भारी भीर,
भरगई है भारतमें (टेक)

जोसुहागकीसारनजाने। केवल पीहर कोपहंचाने ॥
ऐसी राँड़ घनी घर घर में ।
उपजावति हैं पीर ।१। भर गई भारत में ॥
इन में आंट रहैगी कबलों । जवलोंयेबारीहैं तबलों ॥
जादिन आवैगी तरुणाई ।
कोई न धरैगी धीर ।२। भरगई भारत में ॥
मनमनोजपरप्यारकरैंगे । नयना लाजउतार धरैंगे ॥

रस विलास बन में बिहरेंगे ।

सब के रसिक शरीर ।३। भरगई भारत में ॥

जबतुमरोकरोकहारोगे। गिनगिनगर्भनको मारोगे ॥

हातब 'शंकर' कौन बनैगो ।

पंचन में कुल बीर ।४। भर गई भारत में ॥

भजन (७०)

बैठी सुख सूने गेह में,

बाला बिधवा रोती है ॥ टेक,

बैरीबनवसन्त ने मारी। ग्रीषमने फिर फूंक पजारी ॥

अब आई पावसकी बारी। आग लगेगी मेह में,

बूँदा बांदी होती है ॥

बाला बिधवा रोतीहै ॥

गरजरहे घन कोइल कूकें। बोलतमोर न चातकचूकें॥

सुनसुन उठत मदन की हूकें। हा दूखियाकी देह में,

उमगी उमंग थोती है ॥

बाला बिधवा रोती है ॥

सधवा सावन झूल रहीहैं। पायजन्मफल फूलरही हैं॥

इतउतकी सुधि भूलरही हैं। यह असीम सन्देह में,

सानन्द नहीं सोती है ॥

बालाबिधवा रोतीहै ॥

गौरि कहायवरीबर बारौ। रहिरोहिणी सुहाग बिसारौ॥

कन्यातकतौ धीरजधारौ। शङ्कर आज सनेह में,

मनमेल लाज खोती है॥

बाला बिधवा रोती है॥

भजन

(७१)

बकवाद न केवल कीजिये

दिन फेरौ फेर हमारे ॥ टेक ॥

जानि सुधर्म्मअधर्म अधमको—ज्ञानप्रकाश मानभ्रमतमको—
घेर घेर घायल कर हमको— हाय न शोंणित पीजिये—
मत मारौ कोप कटारे ॥ १ ॥ दिन फेरौ फेर हमारे० ॥
हम कठोर कुल में रहती हैं—बन्धन बारिधि में बहती हैं—
मार मार भटकी सहती हैं—पर दुख देख पसीजिये—
सुधि लेहु सभासद सारे ॥ २ ॥दिन फेरौ फेर हमारे० ॥
उन्नति की चरचा करतेहौ—पग मंगल मगमें धरतेहौ—
फिर क्यों कूरों से डरते हौ—प्रण पालक बन लीजिये—
विधवा वध रोकन हारे ॥ ३ ॥ दिन फेरौ फेर हमारे० ॥
वीरन और उपायविचारौ—घर घर न्याय नियोगपसारौ—
बहुर ब्याह की विधि विस्तारौ—अबतौ यों सुख दीजिये—
यदि हौ 'शंकर' के प्यारे ॥ ४ ॥ दिनफेरौ फेर हमारे० ॥

(जार पति को सती का उपदेश)

——:o:——

भजन ॥ ७२ ॥

सैंयां न ऐसी नचावौ पतुरियां । टेक,

गाने पै रीझौ बजाने पै रीझौ,

बन्दीकी छाती में छेदौ न छुरियां।१सैंयां न ऐ०

पापों की पूंजी पचैगी न प्यारे,
खाते फिरौगेहकीमोंकी पुरियां।२। सैंयां नऐ०
डोलौगे डाली डुलाते डुलाते,
हाथों में पूरी न होंगीअंगुरियां।३। सैंयां नऐ०
जो हाय 'शंकर' दशा होगी ऐसी,
तोमेरी कैसेवचालोगेचुरियां ॥४॥ सैंयां न ऐ०

(वेश्या बिलास)

—:o:—

भजन ॥७३॥

नागिनि बनकर डसजायगी ।
इसवारि बधू की चोटी ॥ टेक ॥

सटकारे कोरे कच इसके। जब जी पर लोटेंगे जिसके ॥
तब क्या प्राण रहैंगे तिसके। बंधन में कस जायगी,
मत वाले की मति मोटी (१) इसवारि वधूकी चोटी ॥
भ्रकुटी कुटिल कमान बनेगी। वंक विलोकनि बानबनेगी ॥
भाळ भैरवी तान बनेगी। हा हिय में घस जायगी,
फड़कैगी वोटी वोटी (२) इस वारि वधू की चोटी ॥
नीकी नाक अधर अरुणारे। गोल कपोल पीन कुचप्यारे ॥
कृश कटिपृथुल नितंव निहारे। उर पुर में बस जायगी,
बन व्याधि बड़ी छबि छोटी (३) इसबारि बधूकी चोटी ॥
नित नीके शृंगार करैगी। भावों की भर मार करैगी ॥

प्यारे कहि कहि प्यार करैगी। नस नसमें गस जायगी,
लटकोंकी लोटा पोटी (४) इस बारिबधू की चोटी॥
ठमक ठमक ठगनी ठग मनको। छिन २ छार करैगी तनको॥
छलकर छीन धनीके धनको। और ठौर फसजायगी,
मुखमोड़ छोड़ हितखोटी(५) इसबारि बधूकी चोटी॥
पोच पजारैगी तन गरमी। लोग कहैंगे कूर कुकरमी॥
शिर पै नाचैगी बेशरमी। लोक लाज नस जायगी,
फिरना फिर फैंक लँगोटी (६) इसवारि बधूकी चोटी॥
नगर नारि तजरे नर नरकी। सोग यथा विधि करनी घरकी॥
सुखदासीख मान शङ्करकी। धर्मध्वजा खसजायगी,
मतपी विष रसकी लोटी। इसबारि बधूकी चोटी॥

(बेटी बेचा)

--:०:--

भजन (७४)

मैया मेरौ बाप कुलीन कमाऊ॥ टेक॥
जिन तेरे तन ते उपजाई। मैं बालिका बिकाऊ॥
बेचन चार चमार पठाये। बारी भाट पुरोहित नाऊ॥
मैया मेरौ बाप कुलीन कमाऊ॥ १
सौदा कर लाये वे चारौ। थेली एक अगाऊ॥
बोले सुन जिजमान मिलेंगे। पूरे पांच हजार पचाऊ॥
मैया मेरौ बाप कुलीन कमाऊ॥ २
लै बरात ब्याहन को आयौ। हाथी पै चढ़ हाऊ॥
घर बाहर के ऊकन लागे। थूकन लागे लोग बटाऊ॥
मैया मेरौ बाप कुलीन कमाऊ॥ ३

जा शंकर कौ ससुर कहायौ । हा उरदाहक दाऊ ॥
सो बैरी बूढ़ौ बजमारौ । मेरौ कन्थ कि तेरौ ताऊ ॥
मैया मेरौ बाप कुलीन कमाऊ ॥ ४

(पादप शिक्षा)

भजन ॥ ७८ ॥

करना उपकार,
तरु समूह से सीखौ ॥ टेक ॥

ये गुल्मलता तरुसारे । हैं जीवन प्राण हमारे ॥
प्यारे परम उदार । तरुसमूह से सीखौ, कर०
नित अन्नदान करतेहैं । हम लोग उदर भरतेहैं ॥
अपने बारम्बार । तरुसमूह से सीखौ, कर०
रस मूल फूल फलमेवा ॥ सब को बाटें बिनसेवा ॥
नवनव करदातार । तरुसमूह से सीखौ, कर०
वन औषधि रोग निकालें । पुनिपवनशुद्धकरपालें ॥
परिमल पुंज पसार । तरुसमूहसे सीखौ, कर०
खीचें अवनी के जलको । देते हैं वल बादलको ॥
समझौ बीर विचार । तरुसमूह से सीखौ, कर०
ये उपादान वस्त्रोंके । अवयव अनेक अस्त्रों के ॥
सब शस्त्रों के यार । तरुसमूह से सीखौ, कर०
चुपचाप खड़े रहते हैं । गरमीसरदी सहते हैं ॥
सेकें धूपतुषार । तरुसमूह से सीखौ, कर०
उपकार अलौकिक इनका । करताहै तिनकातिनका ॥
'शंकर' कहैं पुकार । तरुसमूह से सीखौ, कर०

(उलटे ठाकुर)

——:०:——

भजन (७६)

करडारे उलटे ठाठ,
हमारे ठाकुरनेसारे (टेक)

अकल एकत्राता त्रिभुवनके, सुखदाता स्वामी सन्तन के,
ऐसे बिमल बचन बेदनके, रोंदरोंद मारे ॥१॥ करडारेउल०
चेतन वेष बिशाल बिसारौ, उड़ता जनित कलेवरधारौ,
प्रभुता कौ परिवार पजारौ, बनबैठे कारे ॥२॥ करडारेउल०
झूँठेसाज अनूठे साजे, स्वाभाविक लक्षण तजभाजे,
जगमोहनमें आयबिराजे, जगजोहन हारे॥३॥ करड़ारेउल०
मुखसरोज कछुनाहिं बखाने, नाकन परिमलको पहिचाने,
पलकें मारानिहारन जाने, नयना रतनारे॥४॥करडारेउल०
कबहुन कानसुने शब्दन को, रसना चाखति नाहिं रसनको,
कितगईत्वागत्वचाप्रियतनको,प्राणहीनप्यारे॥५॥करडारेउ०
सटकारे सायुधकर चारौ, परमाँखिनहूँ को न बिड़ारौ,
पायनते कितहून पधारौ, नाथभये भारे ॥६॥ करडारेउल०
अंगन ठूंस ठोस ठकुराई, अचलाछवि की ओढ़ निकाई,
ठसकीली करतूति चलाई, मोहेमतवारे ॥७॥करडारेउल०
पापनके पैंड़ा करडारे , सबसामयिक असुरसंहारे,
तर्कशील "शंकर" फटकारे,अबुधभक्त तारे ॥८॥करडारेउल०

——:१:——

(जड़ शंकर)

----:०:----

मालती सवैया (७७)

शैल बिशाल मही तल फोड़ बढ़े तिनको तुम तोड़ कढ़े हौ ।
लैलुड़की जल धार धड़ा धड़ नेधर गोल मटोल गढ़े हौ ॥
प्राण बिहीन कलेवर धार बिराज रहे न लिखे न पढ़े हौ ।
हे जड़ देव शिला सुत "शंकर" भारत पै करि कोप चढ़े हौ ॥*

(अवैदिक भक्तों की भावना)

----:०:----

भजन ॥ ७८ ॥

सब संतन के दुख टारे ,
हरिने लाखन अधम उधारे (टेक)
धार धार तन मार मार खल , बार बार जन तारे ।
पहुंचे जहां न आप तहां पर , भेज दिये हरकारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥
भीर पड़े पर भक्तन के सब , काम श्याम ने सारे ।
फिर तेतीस करोड़ देवता , राखि दिये रखवारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥

---

* सम्प्रति ऐसे जड़ शङ्कर के अनेक उपासक हैं जिन्हें अविद्या वश कुछ नहीं सूझ पड़ता ।

(कर्मसिंह उपमंत्री)

मरती बार हरिजिन पापिन , हरि के नाम उचारे ।
तिन को मुक्ति दई बिन मांगे , काटे संकट सारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥
अपने पुर के पंथ दिखाये , सब को न्यारे न्यारे ।
जिन को गहि गहि गिरते पड़ते, चले जात मतवारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥
जामग जोजन आप जात हैं , कहँ और को आरे ।
राखे खोल हमारे गुरुने , हरि मंदिर के द्वारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥
हरि गुण गाय गाय लघु लोगन , सुगम ग्रंथगढ़ डारे।
जिन के आगे हारे प्यारे , चारौ वेद बिचारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥
जिन के कंकण कंठी माला , छापे तिलक निहारे ।
तिनको हरिने परम भागवत , जाने अपने प्यारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥
मनमानी सिखमान रँगीले , गण बैकुंठ सिधारे ॥
"शंकर"जाय कहां घरही में , प्रभु के पाय पखारे ॥
हरिने लाखन अधम उधारे ॥

(हमारा कथन)

---:०:---

दोहा(७९)

बन बन जन करतार के , दूत पूत अवतार ।
मेळ भेंट कर मर गये , बैर बिरोध पसार ॥

अब अवश्य खुल जायगी ,जाल पालकी पोल।
बाजैगो भूगोल पर , धर्म राज कौ ढोल ॥

(*पितर पुरोहितों से प्रार्थना*)

——:०:——

घनाक्षरी * कवित्त ॥८०॥

जीवन विताय जाय बैठत हैं जीव जहां शंकर तहांकी अतिअकथ कहानी है। रेलकी न रेल पेल तार तड़िता कौ नाहिं डांक डांकिया न की न जानी है न आनी है ॥ भेजत हौ पिंड पट पानी भूत प्रेतन को ऐसी रीति आपने पुरोहित जी जानी है। सोई विधि हमको सिखावौ महाराज आज व्यासजीके पास एक पतिया पठानी है ॥*॥

(नरेशों से निवेदन)

——:०:——

घनाक्षरी कवित्त (८१)

ऐसी दीठ राखौ देश कोष पै नरेश जैसी देव न विसारैं सुधि सोम रस भांड़ें की। साम दाम दण्ड भेद चारौ उरधारौ जासों कीरतिपै कालिमा न लागे नीति छांड़ेंकी॥ बैरिन को मारौ सांची सीख मान 'शंकर' की एती परलीजिये बड़ाई रारि मांड़ें की। हारौ बांधौ बीर जो तिहारे तीर आवै चाहै सीस न नवावै पै नपावै धार खांड़ें की ॥

* व्यास जी से पत्र द्वारा पूछेंगे कि आपके रचे हुये पुराणों में अण्ड बण्ड गाथा औंर परस्पर विरोध की भरमार क्यों है।

(कर्णसिंह उपमन्त्री)

(कल्पित भय)

--:0:--

भजन (८२)

कल्पित भय की भरमार से,
भोले भाई डरते हैं ॥ टेक ॥

चटकी चंडी चामड़ मैया । अटके भूत उठाय उठैया ॥
जागे ज़ाहिर पीर जखैया । गाज़ी मियां मदार से,
थर थर कांपा करते हैं । १ । भोले भाई डरते हैं ।
काल चक्र दिग् शूल दहाड़ें । चढ़ि योगिनि भद्रा उरफाड़ें ॥
धर २ खोटे खेट पछाड़ें । दग्धा तिथि दुरवार से,
बच २ कर पग धरते हैं । २ । भोले भाई डरते हैं ।
मारें तंत्र मंत्र के भाले । लूटें मारण मोहन वाले ॥
घुड़कें धरि दैवके साले । लंठों की ललकार से,
धोती में हग भरते हैं । ३ । भोले भाई डरते हैं ।
चेतन की सुधि भूल अनारी । जड़ मूरति के बने पुजारी ॥
शंकर भोग २ दुख भारी । अक्षर के अवतार से,
शंका करते मरते हैं । ४ । भोले भाईडरते हैं ।

(स्वारथी सण्डे)

भजन (८३)

छलबल जलके जीमूत हैं,
सब स्वारथ साधक सण्डे ॥टेक॥

रसिक शिरोमणि व्यास हमारे, श्रीब्रजराज प्रिया के प्यारे ।

सौनाकादि मुनि श्रोतासारे, आप कथक्कड़ सूत हैं ।
हरताप करें उरठण्डे (१) सबस्वारथ साधक सण्डे ॥
पण्डित राज अनर्गल बोलें, तर्क तुलापर तत्व न तोलें ।
बद बद पोल परस्पर खोलें, भ्रमके भेद अकूत हैं ।
गाढ़े झंझटके झगडे (२) सबस्वारथ साधक सगडे ॥
जो जन तीरथ को जाते हैं, पछताते घरको आते हैं ।
यों अनुभूत भजन गाते हैं, हाय भयानक भूत हैं ।
ठग जार पुजारी पंडे (३) सबस्वारथ साधक सगडे ॥
पोप कहैं जोकुछ तुम दोगे, सो सब जाय स्वर्ग में लोगे ।
फिर तन धार धरापति होगे, हम देबों के दूत हैं ।
भरदेहु हमारे हंडे (४) सब स्वारथ साधक संडे ॥
अद्भुतअन्त वेदका पाया, रहा एकरस मिली न माया ।
जीव सच्चिदानन्द कहाया, ऐसे अगणित ऊत हैं ।
खागये व्रह्मके अगडे (५) सबस्वारथ साधक सगडे ॥
जय नरसिंह रटें हुरदंगे, विचरें वेष बनाय कुढंगे ।
राख रमाय रहैं नित नंगें, अलबेले अबधूत हैं ।
फूँकेजड़ लक्कड़कंडे (६) सबस्वारथ साधकसगडे ॥
कौल कराल कलेवर कामी, पञ्चमकार प्रचारक नामी ।
मात कालिका के अनुगामी, भूतनाथ के पूत है ।
बन बैठे बीर गुरगडे (७) सब स्वारथ साधक संडे ॥
शङ्कर खाय लोभ की लातें, मारें माल चलाकर घातें ।
उगलें गूढ़ ज्ञानकी बातें, सुनौ न छलकी छूत हैं ।
देखौ इनके हथ खंडे (८) सबस्वारथ साधक संडे ॥

(पाखंड खंडन)

भजन ॥ ८४ ॥

इस अण्ड बण्ड पाखण्डको,
हम खण्डखण्ड करदेंगे ॥ टेक ॥
आँख अविद्या की फोडेंगे । गोड़गपोड़ों के तोड़ेंगे ॥
जियतन छलबलको छोड़ेंगे । ढाय ढोंग बरबण्ड को,
मुख में माटी भर देंगे ॥१॥ हम खण्डखण्ड कर०
जड़पूजा की जड़ न रहेगी । ग्रंथोंकी गड़बड़ न रहेगी ॥
पंथों की अड़गड़न रहेगी । मायावाद प्रचण्डको,
अपनाय न आदरदेंगे ॥२॥ हम खण्डखण्ड कर०
अवतारों की आसन होगी । भूतोंकीभयत्रासन होगी ॥
पिण्डोदक विधिपासन होगी । पौराणिक यमदंड को,
भ्रमके शिर पै धरदेंगे ॥३॥ हम खंडखंड कर०
छुआ छूत परछार पड़ेगी । मन्द मतोंपर मार पड़ेगी ॥
हटके पीछे हार पड़ेगी । शंकर घोर घमंड को,
घुड़की निशि वासर देंगे ॥४॥ हम खंडखंड कर०

घनाक्षरी कवित्त (८५)

जीको जड़ जालियों के जाल में फसावै नाहिं नेकहू न चाह करै चूतिया के चांड़े की । शंकर न बैठे मत वादिन की मंडली में एकहू न माने बात पोपन के पांड़े की ॥ पंथिन की भारी भीर देखत ही जाने ताहि गोरुन की लार गुरु नायक के टांड़े की । ऐसौ वीर पाथर की पूतरी के पायन पै सीस न नवावै पै तपावै धार खांड़े की ॥

घनाक्षरी कवित्त ॥८६॥

चेतन के ठौर जड़ पूजें जड़ मूरतिको, बंधन अबोध के न जानें कब टूटेंगे। भूत प्रेत भैरव भवानी की कृपा के मिस, कबलौं कटेंगे पशु पान घट फूटेंगे॥ कौन दिन जाल कुंडलीन के उड़ेंगे रंग, कैसें पिंड दान की पृथा से प्राण छूटेंगे। शंकर न जबलौं प्रचार होय वेदन कौ, भारत को तबलौं लबार लंठ लूटेंगे॥

(अभिनवनिदर्शन)

-----:०:-----

षटपदी छन्द (८७)

(आस्तिकालसी)

एक अनादि अनन्त अनामय मंगल राशी॥
शुद्ध सच्चिदानन्द विश्व व्यापक अविनाशी॥
सर्वशक्ति सम्पन्न सनातन वेद बखाने॥
ब्रह्मबोध वारिधि विमुक्त शंकर जगजाने॥
करतार अकारण आपने क्यों कराल कौतुकरचे॥
हम डारे कर्म प्रवाह में हायन काहू विधि बचे॥१॥

(विशुद्धालसी)

उपजावे उरमें असीम आनन्द उदासी॥
आंखन में अंगड़ाति नींद मंगल महिमासी॥
केल करै करतूति कथा केवल बातन में॥
भूल भरी भरपूर उठे उतसाह न मन में॥

नित पलकापै पौढ़े रहैं एक भरोसे राम के ॥
कवि शंकर साहस हीन हम और न काहू काम के ॥

(धर्म्मध्वज आलसी)

औरन के अपकार बिना धन हाथ न आवै ॥
ऐसे अन भल भाजन को फिर कौन कमावै ॥
लोभी संपति पाय पाप की पूंजी जोरैं ॥
पै संतोष निकेत नाहिं अघ ओघ बटोरैं ॥
तन त्याग पात की अन्त को नरकन में भरजायंगे ॥
सब कर्म्म हीन हम से खरे भवसागर तर जायंगे ॥

(कुसीदासी आलसी)

तन को चकनाचूर करै खेती सुख सूनी ॥
सेवा विष की बेल पीर उपजावै दूनी ॥
दुखदे उन्नति के शिरपै वाणिज्य चढ़ावै ॥
परहां उद्यम राज ब्याज आनन्द बढ़ावै ॥
सुखदा कुसीद की जीविका याहि कहौ कैसे तजैं ॥
कछु काम नाहिं ठाली पड़े बैठे ठाकुर को भजैं ॥ ४ ॥

(उद्दंड आलसी)

विद्या की सुधि भूल बीरता लात न मारी ॥
उद्यम की दरखोय धूरि सेवा पर डारी ॥
कोसैं साधन को विचार की छाती छोलैं ॥
अंड बंड बोलैं निशंक बौरे से डोलैं,
गुरु लोगन के गुरु देव हम घर घर पूजे जात हैं ॥
गुण गाय लाडलोलाल के माल पराये खात हैं ॥ ५ ॥

(बागूर्बा र आलसी)

जोर अनेक समाज अनर्गल गाल बजाये ॥
साहस के स्वर साधि गीत गौरव के गाये ॥
उन्नति की आशा प्रसंग के संग नचाई ॥
पीट पीट तारी सुधार की धूम मचाई ॥
कविशंकर सेवा में रहैं अनुरागी उपदेश के ॥
हम चंदा की चारौ चरैं हैं हितकारी देश के ॥ ६ ॥

(औघड़ आलसी)

छोड़ घनौ परिवार पिता सुर धाम सिधारे ॥
बूढ़े संकट सागर में सुख भोग हमारे ॥
अंबर भूषण और बेच बासन सब खाये ॥
हौन लगे उपवास घिरे घर में घबराये ॥
तब लोक लाज कुल कानि को चाटरचीरत्ननानई ॥
गुरु औघड़ के चेलाभये चैन करैं चिंतागई ॥ ७ ॥

(अक्खड़ आलसी)

वंचक चोर कठोर कुचाली घोर घमंडी ॥
पामर पोच पिशाच पिशुन पूरे पाखंडी ॥
क्रोधी कटुवादी लबार कचलंपट कामी ॥
सूम निरंकुशनीच कूर कुल नायक नामी ॥
कमचोर कुजाति जमात की पाप कथा कबलों कहैं ॥
इन साधु बेषधारीनमें हम से मुनि मुखियारहैं ॥८॥

----:०:----

(दाम्भिक दृश्य)

दोहा (८८)

मूड़ मुड़ायौ मान कर , मूढ़ गुरू की सीख ।
संडा स्वामी जी भये , मांगत डोलें भीख ॥
ओढ़े अम्बर गेरुआ , धार गठीलौ दंड ।
देखौ दंडीजी बने , व्यापक ब्रह्म अखंड ॥
कस कोपीन लपेटरज, कर शिर घोटम घोट ।
अलखराम मोटे भये , खाय भीख के गोट ॥
छेद लिंगकी थूथरी , लिगौकड़ौ लटकाय ।
बाबाजी कौ योग बल , हालत झूलत जाय ॥
फक्कड़ की ठाड़ी भुजा, लक्कड़सी लखतात।
या ठगई के ठूंठमें , कढ़ बढ़े नखपात ॥
राखरमाई अंग में , चिलम चीमटा हाथ ।
मांगत फिरें महंतजी , बालक बाई साथ ॥
हाड़न की माला धरें , मदिरा मल पीखाय ॥
कापालिकजी नरभैरं, घर घर अलख जगाय॥
चिलम चढ़ाई चरस की , चट चूंसी ललकार।
जागी ज्वाला जोगिनी , धार धुआं की धार॥
तापत हौ दिनरात क्यों , नागाजी मलखेह ।
पूरौतप कर लीजिये , धर धूनी में देह ॥
ऊपर से त्यागी बने, भीतर धनकी आस ।
नारे के चेरे चरें, बाबा गरधन दास ॥
रूखड़ सूखड़ आदि सब, उदरदेव के दास ।
'शंकर' कबहुं न जायगी, विद्या इनके पास ॥

(अबोध बन्धु)

मालती सवैया ॥८९॥

ये परखैं पर नारिबिने रंड़िया गणिका गणियान के प्यारे।
साथ रहैं कुटनी भडुआ कुल बोरन के कुल पालन हारे॥
आमिष खाय पिये मदिरा करनीकर पोच सुकर्म्मबिसारे।
भूल गये प्रभु "शंकर" को मतिमन्द भये प्रिय बन्धुहमारे॥

(अन्धेर)

मालती सवैया (९०)

बोझ लदै हय हाथिनपै खरखात खड़े नित जात खुजाये।
बन्धन में मृगराज पड़े शठश्यार स्वतन्त्र पुकारत पाये॥
मान सरोवर में बिहरैं बक "शंकर" मार मराल उड़ाये।
मान घटौ गुरु लोगन कौ जग बंचक पामर पंचकहाये॥

(अधोगति)

माधवी सवैया ॥ ९१ ॥

कित वैदिक बोध बिलाय गयौ छलके बलकी छबि छूटपड़ी।
पुरषारथ साहस मेल मिटे मत पन्थन के मिस फूटपड़ी॥
अधिकार भयौ पर देशिनकौ धन धाम धरापर लूटपड़ी।
कवि "शंकर" आरतभारत पै भय भूरि अचानक टूटपड़ी॥

(हमारी दुर्दशा)

महामोद कारी छन्द (९२)

(ब्रा०) पढ़े हैं किसी कोन विद्या पढ़ाना, अविद्या पसारी।
(क्ष०) बने सिंह संग्राम से भाग जाना, जियौ शस्त्रधारी॥
(वै०) करें और व्यापार व्याजव्याज खाना, महामोदकारी।
(शू०) सगे बापकीभीन सेवा उठाना, दया दूर मारी॥

(फूटकीफटकार)

कड़का ॥ ९३ ॥

फैलफूट इन फुटैलन में फूट फली मैं फूट ।
फूटफूट रोरो कहतेहैं फूट फबीली लूट ॥
सहैं फटकार न टरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥
घोर अबिद्या माता मेरी बाप प्रतापी पाप ।
सर्वनाश स्वामीकी दारा बेटातीनों ताप ॥
निरन्तर संग बिचरते हैं ।
कहा मेरा सबकरते हैं ॥
डाह देश बंचकता नगरी स्वारथ सुन्दर धाम ।
वलबिहार थलऔर अमंगल जंगलछलआराम ॥
जहां अवगुण मृगचरते हैं ।
कहा मेरा सबकरते हैं ॥
झूंठे साँचे झगड़ों से जो छूटजायगा गौन ।
पुलिसवकीलअदालतकीफिरचोटसहेगाकौन॥
गवाहों कीनर भरते हैं ।
कहा मेरा सबकरते हैं ॥
बातबात में होड़ाहोड़ी करैं न धनकी धूरि ।
तौफिरकैसे हाथलगैगी कीरति जीवनमूरि ॥
बड़ाई पैकेट मरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥

ये आचार विचार ग्रन्थ मत पद्धति पंथ अनेक ।
कभी न होने देंगे भोले भारत भरको एक ॥
हठी हठको न विसरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥
छिन्न भिन्न रखती हूं इनको ठौर ठौर अनमेळ ।
मेरे मृग शङ्कर कैसे गण खुल खुल खेलें खेल ॥
किसी की ओर न ढरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥
भोजन भेज विदेशन को घर भरैं कबाड़ मगाय ।
या दरिद्र दाता उद्यम की सम्पति कहां समाय ॥
ध्यान धन का ध्रुव धरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥
हैट कोट पतलून बूट सज बोलैं गिट पिट बैन ।
प्यारे गाड पूत के कारे नेटिव जेंटिलमैन ॥
गौन घरनी धर वरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥
आरज बन्धु नागरी भाषा भारत देश वखान ।
कभी न कहते हिन्दू भाई हिन्दू हिन्दुस्तान ॥
गाल उरदू के छरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥
खान पानमें दुर दुर छी छी छोंके छूआ छूत ।
ठौर ठौर दंभोदक छिड़कें वन जंगम जीमूत ॥
पाप दिनरात पखरते हैं ।
कहा मेरा सब करते हैं ॥
वेलू पेन्सिल के विकवैया मन में राखें आंट ।
घर वैठे लूटें लोगन को झूठे नोटिस बांट ॥

विसासी गांठ कतरते हैं।
कहा मेरा सब करते हैं॥
आदर कौन करे कविता कौ दीन भये कविलोग।
रंडी मुंडी भाँड़ भगातिया भडुआ भोगें भोग॥
अमीरों का धन हरते हैं।
कहा मेरा सब करते हैं॥

(नवीन वेदान्ती)

(इनका उपदेश)
गंगोदक छन्द (९४)

कालके गालमें मोहकी सेजपै मंदभागी पड़ा सोरहा जागरे
दंडयामादि दंतावली केतले चूर लाखों भये चूतिया भागरे
खालिये ढेरकेढेर प्राणी इसी ढंग से अंतको तोहिभिखायगा
चेतजा तू इसे ज्ञानकीआगमें जारदेजीवसे ब्रह्महोजायगा

(इनका उद्देश)

(भुजंगी छन्द)

जहांहस्त पादादिकी कल्पनाहै वहां देहका नामआतानहींहै
उसीदेहको एकअंगी कहैतौ जुदाअंग कोई दिखातानहींहै
इसीभाँतिसे भेदकी भावनाकोअविद्या जगज्जालमें जोड़तीहै
मिलासर्व संघातमें ब्रह्मविद्याकिसीको निरालानहींछोड़तीहै

(साधन कोटि)

(महा भुजंगप्रयात छन्द)

मिटाई महामोहमायागुरूने दियामंत्रमें शुद्धज्ञानी बनाया
कहादेखले बातकीबातमें सच्चिदानन्दका रूपऐसादिखाया

जगज्जाल सारासमाया उसीमैंनन्यारेरहे आपमैंभीमिलाया
करैभेदकी कल्पना कौन कैसे पताएकमें दूसरे कानपाया

(सिद्धकोटि)

(भुजंग प्रयातछन्द)

हुआद्वैतका दूर झूंठाझमला। मिटाभेद कोई गुरूहैनचेला।
रहासर्वसंघातमैंही अकेला। मिलाआपहीआपमेंखेलखेला।

(हमाराकथन)

(दोहा) (९५)

शंकर साँचे से लगें झूँठे भौतिक भोग ॥
या बिधि माया बादरच ब्रह्मबने लघुलोग ॥

राजगीत ॥९६॥

खिलौना मान मायाका जिसे झूँठा बताते हौ ॥
उसी संसार में बैठे लबड़ धों धों मचाते हौ ॥
अविद्याके अखाड़ेमें खिलाकर खेल विद्याका ॥
अजी अद्वैतकी लीला कहौ किसको दिखाते हौ ॥
नपहले थान अबकुछ है नहोगा औरकुछ आगे ॥
भला फिर कौन भूला है किसे भ्रमसे छुड़ाते हौ ॥
असीमानन्दका सांचा भरा विज्ञान से पूरा ॥
उसे अज्ञानका पुतला बनाकर क्यों नचाते हौ ॥
न जानोंदासपन कोभी बने स्वामी अज्ञानोंके ॥
इसी करतूति पर फूले न जामेमें समाते हौ ॥
भजौ सुखधाम शंकरको सुनो उपदेश वेदोंके ॥
करो उपकार औरोंका वृथा क्यों राटखोते हौ ॥

(उपदेश)

किरीट छन्द (९७)

बंधन मुक्ति दुकूलन माहिं त्रिधा दुख वारि भरौ भगसागर।
संसृत चक्र तरंगनमें पड़ तैरत बूड़त जीव चराचर ॥
धर्म्म जहाज महाव्रत केवट सम्वित ज्ञान सहायक जापर।
"शंकर" साधुतरौ चढ़ितापर बारकरौ जिन वार बराबर ॥

मालती सवैया (९८)

साहस राखि सुकर्म्म करौ नित औरन कौ अपकार न कीजै।
नीति पसार अनीति विसार सदा सब को सुख दैयश लीजै ॥
मान भली गुरु लोगन की सिख शंकर प्रेम सुधारस पीजै।
स्वारथ साधि जियौ जग में परमारथ के हित प्राण हुं दीजै ॥

दोहा (९९)

भोगत भोगत घोर दुख, देख भये सित केश।
अबहूं चेत अचेत सुन, शंकर कौ उपदेश ॥

मालती सवैया (१००)

जबतू अपनी करनी तरनी शुभसाधन भारन सौं भरि है।
चढ़ि तापर "शंकर" केवटके ढिंग धर्म धरोहरिको धरि है ॥
पुनि गैलगहै उपकारिनकी तव संसृत सागर सौंतरि है।
क्षण भंगुर जीवन के दिन बीतगये पर बोल कहाकरि है॥

मालती सवैया (१०१)

आय बसीतनमाहिं जराअबतौ सितकेश बिलोक लजौरे।
चाल चलौ गुरुलोगनकी गहिवैदिक धर्म अधर्म तजौरे ॥
छोरि धरौ छल के हथियार महा सुख साधक साज सजौरे।
श्वास रहै जबलौं तवलौं प्रभु शंकर को धर ध्यान भजौरे ॥

---:o:---

श्रीमती राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरियाकी परलोक यात्रा पर भारत का शोक ।

(शोक शिरोमणि)

दोहा—जाकी कीरति ने किये, शङ्कर से सब लोक ।
जननी पै अब नाहिं सो, शोक शोक हा शोक ॥

अशोक शिखा दण्डक ।

कृपाण काढ़ि न्याय की फिरै प्रचण्ड राज दण्ड धर्म के प्रचार में सुकर्म की न रोक टोक । बधे रहैं यथाधिकार नीति के प्रबन्ध में महीपदेश देश के प्रजान के अनेक थोक ॥ हरी भरी वसुन्धरा बसे विलास राग रंग भोग भांति भांति के करै न होड़ इन्द्रलोक । विसार या विभूति को प्रजेश पूत को बनाय हा अशोक मूल भा कहां गई पसार शोक ।

(शोक और हर्ष)

षट्पदी छन्द ।

शोक महातम मातने तन त्याग पसारी । भारतके गौरव रवि कीआनन्द उजारी ॥ लीलाकरैं विषाद हर्ष उपजायउदासी ॥ मिलकर तिमिर प्रकाश भई शंकर संध्यासी ॥ मन पंकज पुञ्जप्रजानके छिन २ जीवन तालमें । प्रगटै संकोच विकास मय भाव दुरंगी कालमें ॥

(भारत प्रभु सप्तम एडवर्ड का प्रचण्ड प्रताप)

(घनाक्षरी छन्द)

काल अनुकूल रहै भूत वशीभूत भये बीजुरी बसीठी पूरे तारन पै तानेसे । पोहि राखे शंकर प्रजान के समूह सारे शासनके सूतमें सुभरनी के दानेसे ॥ सेवा करैं राजा महाराजा महाराजकहैं बैरी कुलबोर बन मौतके निशानेसे ॥ भारतेश भानुको प्रचण्ड तेज ताके कौन देखैं देवहू तो दरसैंगे अलसाने से॥

(श्रीमान् ठाकुर उमराउ सिंह जी वर्म्मा का परलोकवास)

(दोहा) —छायौ देश विदेश में रही न याकी रोक ॥
तीनो तापन की पिता शोकशोक हा शोक ॥

(षटपदी छंद)

हा विवेक बारीश बीर वैदिक व्रत धारी ॥ हा प्रेमामृत के प्रवाह प्रिय पर हित कारी॥ हा श्री स्वामी दयानन्द मुनि के अनुगामी॥ हा ठाकुर उमराउसिंह बरमा नर नामी ॥ तुम जाय बसे परलोक में व्याकुल छोड़ समाज को ॥ कवि शङ्कर हमको शोक में धीर धरावै आज को ॥ २ ॥

(प्रधान जी के वियोग में समाज की दुर्दशा)

(षटपदी छंद)

आज अठौठा की समाज तज सामगान को। हा कवि शङ्कर रोय रह्यौ प्यारे प्रधान को ॥ उपदेशक बुध उप प्रधान उर थाम पुकारें। मंत्री उप मंत्री कोषाधिप धीर न धारें ॥ गति पुस्तकेश की को कहै विकल सभासद कर दिये। उमरावसिंह के शोक ने संकट से घट भर दिये ॥३॥

(ठाकुर साहिब की रुग्नावस्था)

(षटपदी छंद)

हा न भयौ दुख दूर हार मानी 'शङ्कर' ने। रोग न जीती हाय डाक्टर मुरलीधर ने ॥ हा गुलाम जब्बार खां न कर सके सुखारी ॥ सिया राम हूं के प्रताप ने पीर न टारी ॥ उमरावसिंह ने अन्त को आस तजी आराम की। ऋषि बाण वर्ष बस गेह में गैल गही धुव धाम की ॥ ४ ॥

(ठाकुर साहिब की अन्तिम दशा और उनका उपदेश)

(षटपदी छंद)

घटौ न घातक रोग अन्त भोगन को आयौ। मोहादिक मिट गये मोद मन माहिं समायौ ॥ देख दशा गुरु बन्धु आदि घर के घबराये ॥ जहां सुमति तहां सम्पति नाना कहि समझाये ॥ हित राखौ भूधर दास पै यों सिख दै परिवार को। उमरावसिंह शङ्कर गये हा विहाय संसार को ॥ ५ ॥

(ठाकुर साहिब का सर्वत्याग)

(षटपदी छंद)

हाय धरा धन धाम ग्राम आराम बिसारे। छोड़े भोग विलास पारिवारिक सुख सारे ॥ प्यारे नातेदार मित्र सेवक पुर बासी ॥ सब तज हर भज सीख बने शङ्कर सन्यासी ॥ उमरावसिंह ने हाय हम जीवित राखे शोक में। तम त्याग अकेले आपही जाय बसे परलोक में ॥६॥

(श्री ठाकुर साहिब का अन्तेष्टि संस्कार)

(षट्पदीछन्द)

शोक भरी सुधि पाय सनेही सारस आये। शव को शाल उढ़ाय बाग़ में अरथी लाये ॥ चन्दनादि भर कुण्ड मांहि पधराय चिता को ॥ पूतन मिल नर मेध रचौ चेताय चिता को ॥ पढ़ वेद मंत्र ढारत रहे हित कर होता घृत घनौ। उमरांव सिंह के दाह कौ शङ्कर बर बानक बनौ ॥ ७

(प्र०) ठाकुर साहिब ने शरीर कब छोड़ा (उ०)

(सोरठा छन्द)

खरस खण्ड करतार सम्वत् सर कातिक बदी।
नवमीतिथि गुरुवार सायंकाल कुलवीर को ॥

(ठाकुर साहिब अब कहांगये हाय)

(रागनी-ग़ज़ल)

अब न जागेंगे सदा को सो गये उमराउ सिंह। मुक्त सारे बन्धनों से हो गये उमराउसिंह ॥ १ ॥ मोह की माया मिटा दी छोड़ इस घर में शरीर। धर्म को ले साथ उसघर को गये उमराउसिंह ॥ २ ॥ सत्य का साबुन लगाकर प्रेमरस की धार में। झीनी चादर के धब्बे धोगये उमराउसिंह ॥ ३ ॥ दान वीरों में प्रतापी कर्ण के भाई बने ॥ एकता के बीज चाहकर बोगये उमराउसिंह ॥ ४ ॥ कब सुधारेगा विधाता इस अभागे देश को ॥ दीन भारत की दशा पर रोगये उमराउसिंह ॥ ५ ॥ हाय शङ्कर अब किसी को भी न पायेंगे कभी। हाथ के अनमोल हीरा खोगये उमराउसिंह ॥ ६ ॥

——:०:——

अवश्य दृष्टव्य।

श्रीयुत पं० नन्दकिशोर जी शर्मा मनेजर आर्य्य भास्कर प्रेस आगरा की असीम कृपा से और डाक्टर अंगदसिंह जी वर्मा के प्रेस में आने जाने से यह पुस्तक बहुत शीघ्र छप गया अतएव हम आप को धन्यवाद देते हैं।

इस पुस्तक के प्रूफ़ देखने में मुझे बहुत श्रम करना पड़ा है तब भी कोई छापे की भूल रहगई होगी तो उसे द्वितियावृत्ति में ठीक कर दिया जायगा।

स्पष्ट वक्ता,
कर्णसिंह।
उपमन्त्री आर्य्य समाज बरौठा
पो० हर्दुआगंज जि० अलीगढ़

पुस्तक मिलने का ठिकाना—

बाबू-भगवन्तसिंह पुस्तकाध्यक्ष

आर्य्यसमाज बरौठा पो० हर्दुआगञ्ज

ज़ि० अलीगढ़ ।